संश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि

परोपकारिणी

दयानन्दसरस्वती

ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - १८ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र सितम्बर (द्वितीय) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

श्री सिद्ध भाऊजी एवं डॉ. धर्मवीर जी

वृष्टि यज्ञ समापन समारोह की झलकियाँ

डी.ए.वी. व ब्लोसम स्कूल के छात्र यज्ञ व प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : १८
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: भाद्रपद शुक्ल, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

सितम्बर द्वितीय २०१५

अनुक्रम

१. फलित होती अल्पसंख्यक व आरक्षण सम्पादकीय		०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. शिक्षा	योगेन्द्र दम्माणी	१४
४. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		१६
५. १९६५ के भारत-पाक युद्ध की.....	मेजर रतनसिंह	१८
६. सूर्य नमस्कार- एक विवेचन	विद्यासागर वर्मा	२३
७. अमर हुतात्मा श्रद्धेय भक्त फूल सिंह	चन्दराम आर्य	२७
८. जीव फल भोगने में परतन्त्र क्यों?	इन्द्रजित् देव	३३
९. पुस्तक-समीक्षा		३४
१०. जिज्ञासा समाधान-९५	आचार्य सोमदेव	३५
११. संस्था-समाचार		३७
१२. स्तुता मया वरदा वेदमाता-१७		४०
१३. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

फलित होती अल्पसंख्यक व आरक्षण विष बेल

कुछ दिन पूर्व दूरदर्शन पर एक घटना दिखाई गई। महाराष्ट्र के राज ठाकरे ने अपने घर पर अनेक बड़े कुत्ते पाल रखे हैं। दूरदर्शन पर दिखाया गया कि कुत्तों से राज ठाकरे खेल रहे हैं, कुत्ते भी ठाकरे से प्रेम कर रहे हैं। दूरदर्शन पर इस घटना को दर्शाने का उद्देश्य कुत्तों का प्रेम नहीं था। हुआ यह था कि राज ठाकरे की पत्नी ने एक पालतू कुत्ते को खाते समय छेड़ दिया, तो कुत्ते ने ठाकरे की पत्नी के मुँह पर इतना काटा कि ६०-६५ टाँकें लगाने पड़े और चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी करानी पड़ी। मनुष्य, कुत्ता या कोई भी प्राणी हो, जब उसके अधिकार अस्तित्व पर संकट आता है तो उसे रोकने का प्रयत्न सभी करते हैं। हम समझते हैं कि मनुष्य ऐसा नहीं करता, यह भी मिथ्या है। जब मनुष्य को लगता है कि उसके स्वार्थ की हानि हो रही है, तब वह भी ऐसे ही व्यवहार पर उतर आता है। आज आरक्षण के समर्थक या विरोधी इसी मानसिकता से पीड़ित होते जा रहे हैं।

मनुष्य कोई कार्य तो किसी अच्छाई के नाम पर प्रारम्भ करता है, परन्तु धीरे-धीरे उसमें स्वार्थ के कारण लिप्त हो जाता है, फिर उसे अधिकार मानकर छीने जाने के भय से आक्रामक हो जाता है। आरक्षण बहुत पिछड़े लोगों को प्रोत्साहन देने के लिए देश की स्वतन्त्रता के समय दस वर्ष के लिए स्वीकार किया गया था, वही आरक्षण पिछड़ों की जागीर बन गया। लोकतन्त्र में वोट के सामर्थ्य ने उनको उसे बनाये रखने का सामर्थ्य दे दिया। कोई भी सरकार क्यों न हो, इन मतदाताओं के इस स्वार्थ को कोई नहीं छीन सकता। प्रारम्भ में तो यह सीमित था, बहुत वर्षों तक इसकी हानि उन लोगों को पता नहीं लगी जिन्हें आरक्षण प्राप्त नहीं था। धीरे-धीरे पता लगने पर देश के विधान, नियम से विवश होकर सहन करते रहे परन्तु आज जो परिस्थिति देश में उत्पन्न हो गई है, उसमें वे भी संगठित होकर उग्र होने लगे हैं, आन्दोलन करने लगे हैं। यह परिस्थिति देश में धीरे-धीरे विकट होती जा रही है। आरक्षण प्राप्त लोग संगठित होकर अपने आरक्षण को बचाने में लगे हैं तो जिनका अधिकार छीना जा रहा है, वे भी संगठित होकर आन्दोलन करने पर उतारू हैं। ऐसी परिस्थिति में देश संघर्ष और विनाश के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। संघर्ष अब रोका नहीं जा सकता, क्योंकि आरक्षण एक राजनैतिक शक्ति का तो परिणाम है, परन्तु नैतिकता का इसमें अभाव है।

आरक्षण से उसे लाभ हो रहा है, जिसे मिला है उसकी आर्थिक स्थिति और सामाजिक स्थिति में सुधार हो रहा है, परन्तु आरक्षण से देश और समाज की भयंकर हानि हो रही है। आरक्षण की सबसे बड़ी हानि देश की बौद्धिक क्रियाशील सम्पदा का क्षय है। आज प्रतिस्पर्धा के युग में संघर्ष में प्रतिभा को प्रोत्साहन मिलना चाहिए, वहाँ प्रतिभा को कुण्ठित और प्रताड़ित किया जा रहा है। उचित और न्याय से पराजित व्यक्ति को दुःख उतना नहीं होता, जो होता है वह भी अपनी दुर्बलता का होता है, परन्तु अन्याय से पराजित होने का दुःख उसमें आक्रोश, प्रतिकार के भाव उत्पन्न करता है। देश में आज नई पीढ़ी के सामने बहुत सारे संकट हैं, वहाँ एक संकट आरक्षण का है। कोई छात्र चिकित्सा, इञ्जीनियर, प्रशासन, शिक्षा के आरक्षित वर्ग में स्थान पा जाता है, यह परिस्थिति मनुष्य के अन्दर वही भाव उत्पन्न करती है जो किसी प्रतियोगिता में उनका स्वार्थ छिन जाने पर उत्पन्न होते है। अन्य प्राणियों में संघर्ष शक्ति से निर्णायक होता है, परन्तु मनुष्य में निर्णय बुद्धि से किये जाने की अपेक्षा रहती है। यदि यहाँ भी बुद्धि औचित्य न्याय का स्थान शक्ति ले ले तो प्रतिक्रिया में संघर्ष ही मिलेगा, उसे हम कितने समय तक रोक सकते हैं? आरक्षण से अपने एक अयोग्य व्यक्ति को तन्त्र में स्थापित तो कर दिया पर इससे जहां एक योग्य व्यक्ति की प्रतिभा से समाज वञ्चित हो जाता है, वहीं समाज को अयोग्यता का दण्ड वर्षों तक सहना पड़ता है, उसी अनुपात में अयोग्यता बढ़ती जाती है।

गत दिनों आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली के एक चिकित्सक से चर्चा हो रही थी, तब उसने अपनी पीड़ा

व्यक्त करते हुए कहा कि आरक्षण के कारण एक व्यक्ति छात्र या सरकारी सेवक के रूप में ही चयन नहीं, अपितु हर बार आरक्षण के कारण ऊँचा स्थान पा जाता है, फिर जहाँ चिकित्सा जैसा कार्य आता है, तब ये व्यक्ति दर्शनीय हुण्डी की तरह होते हैं और जो कार्य उन्हें करना चाहिए, वह उनसे पिछड़ गये लोगों को करना पड़ता है। गुजरात के पटेल आरक्षण को लेकर समाचार पत्रों में बताया गया कि अन्तर् राष्ट्रीय स्तर पर दो सर्वेक्षण किये गये, जिनके निष्कर्ष में बताया गया है कि भारत की प्रगति में आरक्षण बड़ी बाधा है। आरक्षण के कारण देश की प्रगति मन्द हुई है।

आरक्षण से जहाँ अयोग्यता को प्रश्रय मिला है, वही जातिवाद की जड़ें गहरी हुई हैं। जातिवादी संगठन मजबूत होकर उभरे हैं। आरक्षण का आधार जातिवाद है और आरक्षण के लाभ-हानि से जातियाँ ही प्रभावित होती हैं। एक ओर आरक्षण बचाने के लिए जातीय संगठन बन रहे हैं, वहीं जिन्हें आरक्षण प्राप्त नहीं है, उनके द्वारा आरक्षण प्राप्त करने के लिये जातियों को संगठित किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप पटेल, गुर्जर, जाट आन्दोलनों को हम समाज में देख रहे हैं। आज आन्दोलनों का आधार आवश्यकता या औचित्य नहीं है, आरक्षण प्राप्त जातियाँ शक्ति प्रदर्शन द्वारा अपने आरक्षण को बनाकर रखना चाहती हैं। इतना ही नहीं, ये आरक्षण प्राप्त संगठन निजी क्षेत्र में आरक्षण के लिये सरकार को बाध्य करते रहे हैं। जब आरक्षण का आधार शक्ति प्रदर्शन ही रह गया है, तब समाज की दूसरी जातियों को आन्दोलन करने से कौन रोक सकता है? जो लोग आरक्षण के क्षेत्र में हैं और जो आरक्षण माँग रहे हैं, दोनों लोग अपने समाज की गरीबी के आँकड़े प्रस्तुत कर रहे हैं। क्या समाज में कभी ऐसा हुआ है कि सभी लोग समान रूप से सम्पन्न हुए हों? ऐसा न कभी पहले हुआ और न कभी हो सकता है। समाज में सम्पन्न, मध्यम और गरीब सदा से रहे हैं और कोई भी सत्ता इन तीन वर्गों को मिटा नहीं सकती। न्याय का आधार होता है कि समाज में कोई भी व्यक्ति न्यूनतम आवश्यकताओं से वञ्चित न रहे। आवास, भोजन, शिक्षा, चिकित्सा जैसी सुविधायें न्यूनतम मूल्य पर सुलभ हो। यह व्यवस्था करना शासन का दायित्व है। धन तो कोई बुद्धि से कमा लेता है, मूर्खता से नष्ट भी कर देता है। शासन का दायित्व है कि किसी का धन कोई बलपूर्वक या छलकपट से न छीन ले। यदि इतनी व्यवस्था शासन कर दे तो समाज में सुरक्षा का भाव बढ़ेगा, उपार्जन करने का जिसके पास जैसा सामर्थ्य है, वैसा वह करेगा। जो समर्थ है, उनकी चिन्ता वे स्वयं करेंगे, समाज को उनकी चिन्ता करनी होती है, जो असमर्थ, बुद्धिहीन, विकलांग, वृद्ध एवं रोगी हों। सरकार से गरीब का कोई विरोध नहीं होता, विरोध समाज में तब उत्पन्न होता है, जब गरीब को गरीबी से निकलने नहीं दिया जाता। उसके गरीबी से निकलने के मार्ग बन्द कर दिये जाते हैं। ऐसे समाज को दण्ड भोगना पड़ता है। उसमें वर्ग संघर्ष होता है, ऐसा देश पराधीन होता है। ऐसे समाज को दास बनने से कोई नहीं रोक सकता।

बुद्धिमान लोग इस बात को समझ सकते हैं। यह देश एक हजार वर्ष पराधीन रहा, क्यों रहा? हमने यही आरक्षण अपनाया था। ब्राह्मणों ने इस समाज को सवर्ण-असवर्ण में बाँटा। ब्राह्मणों ने वर्ण व्यवस्था को खण्डित कर जन्म की जाति व्यवस्था को अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए स्थापित किया। इस व्यवस्था से पहले भी शूद्र थे, परन्तु किसी को अपने शूद्र होने पर दु:ख नहीं होता था। शूद्र उसकी एक परिस्थिति थी, वह उसे बदल सकता था, उसका शूद्रत्व उस पर किसी ने थोपा नहीं था, यह केवल उसकी असमर्थता थी। वह उसे यदि दूर कर सकता था तो उसे आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता था। यदि इस जन्म में वह शूद्र रहा भी तो उसकी सन्तान को कोई शूद्र रहने के लिये बाध्य नहीं कर सकता था। वर्ण व्यवस्था तो स्वाभाविक सामर्थ्य, स्वभाव एवं प्रवृत्तियों का व्यवस्थापक चक्र मात्र था। जो लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र शब्दों से भयभीत होते है, घृणा करते हैं या चिड़ते हैं, वे न तो शास्त्र जानते हैं, न मनोविज्ञान की समझ रखते हैं। हमारे शास्त्रों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के भी चार-चार विभाग किये गये हैं। एक ब्राह्मण केवल ब्राह्मण नहीं होता, ब्राह्मण में ब्राह्मणत्त्व प्रधान हो, परन्तु क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के भाव भी कम या अधिक रहते हैं, वैसे ही क्षत्रिय होते हुए ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र हो सकता है। वैश्य में भी ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, शूद्रत्व का अनुपात रहता है। वैसे ही शूद्र भी केवल शूद्र नहीं होता,

उसमें भी ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व व वैश्यत्व का भाव पाया जाता है। जिस मनुष्य में जो भाव प्रबल है, वह वही बन जाता है, बन सकता है। कोई शूद्र, शूद्र रहने के लिए बाध्य नहीं है, उसी प्रकार ब्राह्मणत्व भी किसी की ठेकेदारी नहीं है। यह मात्र व्यवस्था है। समाज देश व्यवस्था से ही चलता है। जिन लोगों ने व्यवस्था को समाप्त किया, वे इस देश की दासता के लिए उत्तरदायी हैं। हम फिर वही कर रहे हैं। पहले सवर्णों ने, ब्राह्मणों ने अपनी मूर्खता, अज्ञानता और स्वार्थ का आरक्षण कर इस समाज और देश का अहित किया, आज दलित और पिछड़ों के नाम पर अयोग्यता को संरक्षण देकर देश का अहित कर रहे हैं।

न्याय में सबको अवसर समान दिया जाता है, फल उनके कार्य और योग्यता के अनुसार दिया जाना उचित है, परन्तु हम एक का अवसर ही छीन रहे हैं और दूसरे को बिना कार्य और बिना योग्यता के फल दे रहे हैं, यह अन्याय है, अनुचित है। इसका परिणाम संघर्ष, वैमनस्य, विनाश तो होना ही है। आज समाज में वह परिस्थिति आ गई है, जब न्याय संगत विचार करने की आवश्यकता है। आप इसे बहुत समय टाल नहीं सकते, समाज को धोखे में नहीं रख सकते। यह देश बड़ा विचित्र है, यहाँ आरक्षण के नाम पर जातिवाद और अयोग्यता का संरक्षण किया जाता है। अल्पसंख्यक होने के नाम पर देश के नियम, कानून और व्यवस्था से मुक्त रहने का अधिकार दिया जाता है। उन्हें धर्म के नाम पर उन्माद, अराजकता फैलाने की स्वतन्त्रता है और देश की सम्पत्ति पर पहला अधिकार भी। इस पर पञ्चतन्त्र की यह उक्ति सटीक बैठती है-

प्रथमस्तावद् अहं मूर्खः द्वितीयो पाशबन्धकः।
ततो राजा च मन्त्री च सर्वं वै मूर्ख मण्डलम्।।

- धर्मवीर

सभा और सेनापति आदि मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम से उत्तम पदार्थों के भोजन से शरीर और आत्मा को पुष्ट और शत्रुओं की जीत कर न्याय की व्यवस्था से सब प्रजा का पालन किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३८

दयानन्द थे भारत की शान

-श्रीकृष्ण चन्द्र शर्मा

लड़े जो कर-करके विषपान।
दयानन्द थे भारत की शान।।
बोले गुरुवर दयानन्द, क्या दक्षिणा दोगे गुरु की।
विनय युक्त वाणी में बोले, आज्ञा दो कह उर की।।
आर्य धर्म की ज्योति बुझी है, चली गई उजियारी।
घोर तिमिर में फंसे हुए हैं, पुत्र सभी नर-नारी।।

चार कार्य करने को निकलो, आज्ञा मेरी मान।
दयानन्द थे भारत की शान।।
पहला है आदेश, देश का करना है उपकार।
देश धर्म से बड़ा नहीं है, जग का कुछ व्यवहार।।
पराधीन हो कष्ट भोगता, जन-जन यहाँ कुराज।
स्वतन्त्रता का शुभ प्रभात हो, आवे आर्य सुराज।।

भाव संचरण हो स्वराज का, छेड़ो ऐसी तान।
दयानन्द थे भारत की शान।।
दूजे भारत की जनता है, सच्ची भोली-भाली।
पाखण्डी रचते रहते हैं, नित नई चाल निराली।।
निजी स्वार्थ हित गढ़ते रहते, झूठे ग्रन्थ पुरान।
हुए आचरणहीन इन्हीं से, भूले सच्चा ज्ञान।।

सत्य शास्त्रों की शिक्षा दे, दूर करो अज्ञान।
दयानन्द थे भारत की शान।।
सत् शास्त्रों से वंचित कर दिया, रच-रच झूठे ग्रन्थ।
अपनी पूजा मान के कारण चलाये, निज-निज पन्थ।।
अपने मत को उजला कहते, अन्य की चादर मैली।
सत्य आचरण के अभाव में दिग्भ्रमता है फैली।।

दूर अविद्या हो इनकी यह तृतीय कार्य महान।
दयानन्द थे भारत की शान।।
वेद ज्ञान के विना देश पर आई विपत्ति अपार।
झूठ, कुरीति पाखण्डों की हो रही है भरमार।।
चला रहे ईश्वर के नाम पर, उदर भरु व्यापार।
कार्य चतुर्थ करो तुम जाकर, वैदिक धर्म प्रचार।।

आपके ये आदेश महान, करूँगा जब तक तन में प्राण।
दयानन्द थे भारत की शान।।

-एस.बी.७, रजनी विहार, हीरापुरा,
अजमेर रोड, जयपुर।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

अमैथुनी सृष्टि के मनुष्यों की आयु:- आदि सृष्टि का वैदिक सिद्धान्त सर्वविदित है। परोपकारी के गत अंकों में बताया जा चुका है कि एक समय था कि हमारी इस मान्यता का (अमैथुनी सृष्टि) का कभी उपहास उड़ाया जाता था परन्तु अब चुपचाप करके अवैदिक मत पंथों को ऋषि दयानन्द की यह देन स्वीकार्य है। परोपकारी में बाइबिल के प्रमाण देकर इस वैदिक सिद्धान्त की दिग्विजय की चर्चा की जा चुकी है। हमारे इस सिद्धान्त के तीन पहलू हैं:-

१. आदि सृष्टि के मनुष्य बिना माता-पिता के भूमि के गर्भ से उत्पन्न हुए।

२. वे सब युवा अवस्था में उत्पन्न हुए।

३. उनका भोजन फल, शाक, वनस्पतियाँ और अन्न दूध आदि थे।

इस सिद्धान्त की खिल्ली उड़ाने वाले आज यह कहने का साहस नहीं करते कि आदि सृष्टि के मनुष्य शिशु के रूप में जन्मे थे। इसके विपरीत बाइबिल में स्पष्ट लिखा है कि परमात्मा भ्रमण करते हुए उद्यान में आदम उसकी पत्नी हव्वा की खोज कर रहा था। उनको आवाजें दी जा रही थी कि अरे तुम कहाँ हो? स्पष्ट है कि पैदा हुये शिशु आवाज सुनकर, समझ ही नहीं सकते। वे उत्तर क्या देंगे? उन्होंने लज्जावश अपनी नग्नता को पत्तों से, छाल से ढ़का। लज्जा शिशुओं को नहीं, जवानों को आती है।

निर्णायक उत्तर:- बाइबिल से यह भी प्रमाणित हो गया है कि अब ईसाई भाई एक जोड़े की नहीं, अनेक स्त्री-पुरुषों की उत्पत्ति मान रहे हैं। अब वैदिक मान्यता पर उठाई जाने वाली आपत्तियों का निर्णायक उत्तर हम पूज्य पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के शब्दों में आगे देते हैं सृष्टि के आदि के मनुष्यों का, ''आमाशय बच्चों के समान होता तो उनके जीवन-निर्वाह के लिए केवल माता का दूध ही आवश्यक था क्योंकि बच्चों के आमाशय अधिक गरिष्ठ (पौष्टिक) भोजन को पचा नहीं सकते परन्तु यह बात असम्भव है कारण? उनकी कोई माता नहीं थी जो उन्हें दूध पिलाती परन्तु यदि उनके आमाशय अन्न को पचा सकते थे तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उनके आमाशय युवकों के समान स्वस्थ व सशक्त थे। युवा आमाशय केवल युवा शरीर में ही रह सकते हैं। यह असम्भव है कि आमाशय तो युवा हो और अन्य अंग शैशव अवस्था में हों।''

आर्य दार्शनिक पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने अपने अनूठे, सरल, सबोध तर्क से विरोधियों के आक्षेप का उत्तर देकर आर्ष सिद्धान्त सबको हृदयङ्गम करवा दिया।

पूर्वजों के तर्क व युक्तियाँ सुरक्षित की जायें:- आज हम लोग एक बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। हम कुछ हल्के दृष्टान्त, हंसाने वाले चुटकले सुनाकर अपने व्याख्यानों को रोचक बनाने की होड़ में लगे रहते हैं। इससे हमारा स्तर गिरता जा रहा है। यह चिन्ता का विषय है। पं. रामचन्द्र जी देहलवी हैदराबाद गये तो आपने हिन्दुओं के लिए मुसलमानों के लिए व्याख्यान के पश्चात् शंका करने के दिन निश्चित कर रखे थे। निजाम ने प्रतिबन्ध लगा दिया कि मुसलमान पण्डित जी से शंका समाधन कर ही नहीं सकता। वह जानता था कि पण्डित रामचन्द्र जी का उत्तर सुनकर मुसलमान का ईमान डोल जायेगा। उसके भीतर वैदिक धर्म घुस जायेगा। **देहलवी जी से प्रश्न करने पर लगाई गई यह पाबन्दी एक ऐतिहासिक घटना है।**

इससे हमने क्या सीखा?:- हमें बड़ों के मनन-चिन्तन की सुरक्षा को मुख्यता देकर नये सिरे से उनके विचारों पर गहन चिन्तन करना होगा।

होना तो यह चाहिये था कि पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पं. गणपति शर्मा, स्वामी नित्यानन्द, पं. धर्मभिक्षु, श्री महाशय चिरञ्जीलाल प्रेम, पं. चमूपति, पं. शान्तिप्रकाश और पं. अमरसिंह आर्य पथिक आदि सबके मौलिक चिन्तन व युक्तियों को संग्रहीत करके उनका नाम ले लेकर लेखों व व्याख्यानों में उन्हें प्रचारित करके अगली पीढ़ियों तक पहुँचाया जाये।

मैंने इस दिशा में अत्यधिक कार्य किया है। इन महापुरुषों के साहित्य, व्याख्यानों व लेखों से इनकी ज्ञान राशि को खोज-खोज कर सुरक्षित तो किया है परन्तु वक्ता

या तो उनका नाम नहीं लेते हैं और नाम लेते भी हों तो तर्क, युक्ति प्रसंग को बिगाड़ करके रख देते हैं। इसके बीसियों उदाहरण दिये जा सकते हैं। यह बहुत दु:खदायक है।

दु:खी हृदय से ऐसे दो प्रसंग यहाँ दिये जाते हैं। श्रद्धेय पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश, पं. ओम् प्रकाश जी वर्मा दोनों पं. शान्तिप्रकाश जी के पुनर्जन्म विषय पर एक शास्त्रार्थ का प्रेरक प्रसंग सुनाया करते हैं। पण्डित जी के मुख से स्वपक्ष में कुरान की आयतें सुनकर प्रतिपक्षी मौलाना ने अपनी बारी पर पण्डित जी के आयतों के उच्चारण व कुरान पर अधिकार के लिए कहा था, ''कमबख्त पिछले जन्म का कोई हाफिजे कुरान है।''

इस पर पण्डित जी ने कहा- बस पुनर्जन्म का सिद्धान्त सिद्ध हो गया। आपने इसे स्वीकार कर ही लिया है। मैं भी यह घटना सुनाया करता हूँ। शास्त्रार्थ के अध्यक्ष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज थे। यह शास्त्रार्थ लाहौर में हुआ था। वर्मा जी भी यह बताया करते हैं।

अभी पिछले दिनों पं. शान्ति प्रकाश जी के पुत्र श्री वेदप्रकाश जी ने मेरे मुख से यह घटना सुनने की इच्छा प्रकट की। आपने पिताश्री के मुख से कभी इसे सुना था। मैंने उसको पूरा-पूरा प्रसंग सुना दिया। अब हो क्या रहा है। गत दिनों एक भद्रपुरुष ने इस घटना को बिगाड़ कर पं. रामचन्द्र जी देहलवी के नाम से जोड़ दिया। श्री देहलवी जी के पुनर्जन्म विषयक किसी लेख, व्याख्यान और शास्त्रार्थ में इसका कहीं भी संकेत नहीं मिलता।

न जाने लोगों को गड़बड़ करने में क्या स्वाद आता है। एक ने मुझे कहा कि मैंने राधा व श्री कृष्ण पर लेख देना है। कहाँ से सामग्री मिलेगी? मैंने उसे पं. मनसाराम जी की दो पुस्तकें देखने को कहा। उसने झट से लेख तो छपवा दिया परन्तु पं. मनसाराम जी के ग्रन्थ का उल्लेख नहीं किया। क्या ऐसा करके वह ठाकुर अमरसिंह की कोटि का विद्वान् बन गया? बड़ों ने वर्षों श्रम किया, तप किया, दु:ख कष्ट झेले तब जाकर वे पूज्य बने। तस्करी करके या बड़ों का नाम न लेकर, उनकी उपेक्षा करके हम यश नहीं प्राप्त कर सकते।

आचार्य प्रियव्रत जी ने मुझे आज्ञा दी:- आचार्य प्रियव्रत जी ने एक बार मुझे एक भावपूर्ण पत्र लिखकर एक महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपा था। आपने मेरे ग्रन्थ में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के द्वारा सुनाये जाने वाले कई दृष्टान्त पढ़कर यह आज्ञा दी कि मैं स्वामी जी महाराज के सब दृष्टान्तों की खोज करके उनका दृष्टान्त सागर तैयार कर दूँ, वे सत्य कथाओं का अटूट भण्डार थे। यदि स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी विज्ञानानन्द जी, पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. नरेन्द्र जी और आचार्य प्रियव्रत मेरे पर निरन्तर दबाव बनाते तो यह कार्य तब हो सकता था। अब इसे करना अति कठिन है। कोई युवक इस कार्य के लिए आगे निकले तो मैं उसको पूरा-पूरा सहयोग करूँगा। यह एक करणीय कार्य है।

बड़ों को समझो, उन्हें बड़ा मानो तो:- कोई २०-२२ वर्ष पुरानी बात होगी। आर्यसमाज नया बाँस देहली में एक दर्शनाचार्य युवक से भेंट हो गई। वह रोजड़ से दो दर्शनों का आचार्य बनकर आया था। उससे मिलकर बड़ा आनन्द हुआ। तब पं. चमूपति जी के पुत्र श्री डॉ. लाजपतराय भी वहीं बैठे थे। मैंने दर्शनाचार्य जी से पूछा, किस-किस आर्य दार्शनिक के दार्शनिक साहित्य को आपने पढ़ा है? उसने कहा, जो वहाँ पढ़ाये जाते थे, वही ग्रन्थ पढ़े हैं।

अब मैंने उसे कहा- हम त्रैतवाद को मानते हैं। जीव और प्रकृति को भी अनादि व नित्य मानते हैं। मुसलमान जीव की उत्पत्ति तो मानते हैं परन्तु नाश नहीं मानते। हमारे विद्वान् यह प्रश्न पूछते रहे कि क्या एक किनारे वाले भी कोई नदी होती है? जिसका अन्त नहीं उसका आदि भी नहीं होगा और जिसका आदि नहीं उसी का अन्त नहीं होगा। यह नहीं हो सकता कि कहीं एक किनारे की नदी हो।

उसे बताया गया कि झुंझलाकर एक मौलाना ने लिखा कि फिर ऐसी भी तो किनारा न हो अर्थात् जिसका न आदि हो और न अन्त हो।

मैंने कहा- दर्शनाचार्य जी! आप इसका क्या उत्तर देंगे। वह लगे सूत्र पर सूत्र सुनाने परन्तु मियाँ के तर्क को काट न सके। लाजपत जी ने उसे संकेत दिया- भाई किनारे को काटो तब उत्तर बनेगा परन्तु उसे कुछ न सूझा। तब मैंने उसे बताया कि पं. चमूपति जी ने इसका उत्तर दिया, ''हाँ, मौलाना एक ऐसी नदी भी है- अल्लाह मियाँ, जिसका न आदि आप मानते हैं और न अन्त आप मानते

ं।'' कैसा बेजोड़ मौलिक सबकी समझ में आने वाला त्तर है। मैं किसी को निरुत्साहित करना पाप मानता हूँ। िरी इच्छा है कि परोपकारिणी सभा पं. लेखराम जी, वामी दर्शनानन्द जी, पं. चमूपति जी, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय क दार्शनिक चिन्तन पर उच्च स्तरीय शिविर लगाये। इस कार के शिविरों से इन विचारकों का वंश बढ़ेगा। फूलेगा, फलेगा।

यह दोहरा मापदण्ड क्यों?:- 'आर्य सन्देश' दिल्ली के १३ जुलाई के अंक में श्रीमान् भावेश मेरजा जी ने मेरी ई पुस्तक 'इतिहास प्रदूषण' की समीक्षा में अपने मनोभाव व्यक्त किये हैं। मैंने अनेक बार लिखा है कि मैं अपने पाठक के असहमति के अधिकार को स्वीकार करता हूँ। आवश्यक नहीं कि पाठक मुझसे हर बात में सहमत हो। समीक्षक जी ने डॉ. अशोक आर्य जी के एक लेख में मुंशी कन्हैयालाल आर्य विषयक एक चूक पर आपत्ति करते हुए उन्हें जो कहना था कहा और मुझे भी उनके लेख के बारे में लिखा। मैंने भावेश जी को लिखा मैं लेख देखकर उनसे बात करूँगा। अशोक जी को उनकी चूक सुझाई। उन्होंने कहा , मैंने पं. देवप्रकाश जी की पुस्तक में ऐसा पढ़कर लिख दिया। मैंने फिर भी कहा स्रोत का नाम देना चाहिये था और बहुत पढ़कर किसी विषय पर लेखनी चलानी चाहिये।

मैं गत ३०-३५ वर्ष से आर्यसमाज में इतिहास प्रदूषण के महारोग पर लिखता चला आ रहा हूँ परन्तु

'रोग बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की।'

वाली उक्ति के अनुसार यह तो ऊपर से नीचे तक फैल चुका है। भावेश जी ने अशोक जी की चूक पर तो झट से अपना निर्णय दे दिया कि यह भ्रामक कथन है। मैंने कई लेखकों की कई पुस्तकों व लेखों की भयङ्कर भूलों नाम की, सन् की, सम्वत् की, स्थान की, हटावट की मिलावट की बनावट की मनगढ़न्त हदीसें मिलाने की निराधार मिथ्या बातों के अनेक प्रमाण दिये तीस वर्ष से झकझोर रहा हूँ। मेरे एक भी प्रमाण व एक भी टिप्पणी को कोई आगे आकर झुठलाकर तो दिखावे। अशोक जी के एक लेख पर एक कथन पर भावेश जी ने झट से उसका प्रतिवाद कर दिया। अब भी वह ऐसा करते तो अच्छा होता अथवा मेरे दिये प्रमाणों को झुठलाते। यह तो वही बात हुई 'चित भी मेरी और पट भी मेरी'

तड़प-झड़प वाली शैली पर जो आपत्ति समीक्षक ने की है, वही ऋषि दयानन्द, पं. लेखराम, पं. चमूपति, देहलवी जी, पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. धर्मभिक्षु, पं. नरेन्द्र जी पर विरोधी कोर्टों व पुस्तकों में करते चले आ रहे हैं परन्तु कोई असंसदीय शब्द तो किसी कोर्ट में सिद्ध न हो सका। एक व्यक्ति ने गत तीस-पैंतीस वर्ष से प्रदूषण का आन्दोलन छेड़ा है तो उसी पर अधिक लिखा जावेगा। वेश्या व जोधपुर के राज परिवार के लिए आर्यसमाज के इतिहास को ही प्रदूषित करना क्या उचित है?

तड़प-झड़प वाले का लेख ईसाई पत्रिका पवित्र हृदय ने आदर से प्रकाशित किया। जब-जब किसी ने प्रहार किया, चाहे सत्यार्थप्रकाश पर दिल्ली में अभियोग चला, हर बार तड़प-झड़प वाले को ही उत्तर देने व रक्षा के लिए समाज पुकारता है। इसका कारण आप ही बता दें। गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय अमृतसर का **Sikh Theology** विभाग सारा ही तड़प-झड़प वाले के पास पहुँचा तो क्या इससे आर्यसमाज का गौरव बढ़ा या नहीं? किसी और से वह काम ले लेते। महोदय! मुसलमानों ने आचार्य बलदेव जी से कहलवाकर तड़प-झड़प वाले की एक पुस्तक दो बार छापने की अनुमति ली। शहदयार शीराजी एक विदेशी मुस्लिम स्कॉलर ने पं. रामचन्द्र जी देहलवी व दो अन्य महापुरुषों पर तड़प-झड़प वाले से ग्रन्थ लिखवा कर समाज की शोभा शान बढ़ाई या नहीं? ये कार्य आप अपनी विभूति से करवा लेते तो संसार जान जाता। 'इतिहास प्रदूषण' में दिया गया एक प्रमाण, एक टिप्पणी तो झुठलाओ।

परोपकारी पर वार हो तो संगठन भूल जाता है। प्रदूषणकार, हटावट, मिलावट, बनावट करने वाले पर लेखनी उठाई जावे तब संगठन की दुहाई देने का क्या अर्थ? तड़प-झड़प वाला अर्थार्थी, स्वार्थी नहीं परमार्थी पुरुषार्थी है। यह क्यों भूल गये? न कभी किसी से पुरस्कार माँगा है, न सम्मान व पेंशन माँगी है। कई बार अस्वीकार तो करता आया है। तन दिया है, मन दिया है, लहू से ऋषि की वाटिका, सींची है। धन को धूलि जानकर समाज पर वारा है। न तो कभी साहित्य तस्करी की है और न पुस्तकों की तस्करी का पाप कभी किया है। सच को सच तो स्वीकार करो। इसे झुठलाना आपके बस में नहीं है।

ऋषि महर्षि किसने कहा व लिखा?:- ऋषि जीवन विषयक कई प्रश्न आदरणीय विद्वानों व उत्साही सज्जनों ने पूछे। माननीय श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक राजस्थान, श्रीमान् आचार्य विरजानन्द जी झज्जर के प्रश्न बहुत अच्छे थे। जिस महत्त्वपूर्ण घटना की ओर इतिहासज्ञ विरजानन्द जी का ध्यान गया है उसका महत्त्व इतिहासज्ञ व तत्त्वज्ञ ही समझ सकते हैं। इसका प्रचार सब छोटे-बड़े प्रचारकों को सप्रमाण करना चाहिये। आपने पूछा, ''महर्षि ने कहा? और किससे यह कहा था कि मेरी समाधि मत बनाना। यह जड़ पूजा का मूल है। मेरी भस्मी खेतों में डाल देना।''

उन्हें प्रश्न पूछने के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि ऋषि जी ने यह बात मेवाड़ यात्रा में कविराजा श्यामलदास जी से कही थी। यह घटना किस ग्रन्थ में कहाँ मिलेगी? इस प्रश्न के उत्तर में कहा कि सम्पूर्ण जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द के दूसरे भाग में मेवाड़ की घटनायें देखिये। कविराजा श्यामलदास जी ने इस घटना पर एक उत्तम कविता रची थी। इसे हमने पृष्ठ ५९७-५९८ पर दिया है। पढ़ लें।

ऋषि जी को ऋषि महर्षि किसने कहा? कब कहा? इस प्रश्न का उत्तर कभी पहले भी दिया गया था। कादियाँ के मिर्जाइयों ने बड़ी घृणित भाषा में ऋषि जी को ऋषि महर्षि लिखने पर बहुत कुछ लिखा था। उन लोगों ने तो यहाँ तक लिखा कि ऋषिवर के बलिदान के लम्बे समयके पश्चात् मास्टर आत्माराम आदि आर्यों ने स्वामी जी को महर्षि की डिग्री दे दी। श्रद्धेय लक्ष्मण जी ने तब इस घृणित विषैले प्रचार का निराकरण किया। फिर आर्यसमाज ने इस विषय में गहन चिन्तन करके कुछ नहीं लिखा परन्तु विरोधी विष उगलते रहे।

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए मैंने पर्याप्त नये-नये प्रमाण दिये थे। आर्यसमाज की युवा पीढ़ी पूरे दल बल से यह प्रचार करे कि महाराज को सबसे पहले गोरे ईसाई लेखकों में से एक ने एक ही लेख में चार बार ऋषि लिखा था। यह घटना आर्यसमाज स्थापना से बहुत पहले की है। तत्पश्चात् महर्षि के घोर निन्दक दित्तसिंह ज्ञानी ने महर्षि के विरुद्ध लिखी अपनी पुस्तिका में यह लिखा है कि हिन्दू लोग स्वामी दयानन्द को ऋषि-महर्षि मानते व जानते हैं।

सिख भाई अब दित्तसिंह जी ज्ञानी को सिंघ सभा का संस्थापक प्रचारित करके महिमा मण्डित कर रहे हैं। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि दित्तसिंह अपनी इकलौती पुस्तिका में स्वयं को वेदान्ती लिखता है। उसकी इस पुस्तिका में सिखों के ग्रन्थ का एक भी प्रमाण तथा सिख गुरुओं का नाम तक नहीं है। तो ऐसे कई प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि जब आर्यसमाज था ही नहीं, तब विधर्मियों ने उन्हें ऋषि महर्षि माना और आर्यसमाज स्थापित हो गया तब विरोधियों ने उन्हें खुलकर महर्षि लिखा। कुछ प्रतीक्षा करें, नये-नये दस्तावेजों के प्रमाणों से यह पता दिया जावेगा कि पूरे विश्व में स्वामी दयानन्द जी को ऋषि महर्षि माना गया।

कविराजा श्यामलदास आदि विद्वानों व कवियों ने उनके जीवन काल में उन्हें ऋषि महर्षि लिखा। इस तथ्य को कौन झुठला सकता है। ऋषि जी को कोसते रहना, यह तो मताँध लोगों का स्वभाव बन चुका है।

बिखरे मोती:- अपना तो सदैव यही प्रयत्न रहता है कि आर्यसमाज के मिशन को फैलाने के लिए सुयोग्य, परमार्थी व कर्मठ युवकों को प्रोत्साहित किया जावे। देशभर में कई मेधावी पुरुषार्थी युवक अपने-अपने क्षेत्र में कुछ न कुछ कर रहे हैं। अभी इन दिनों भारतीय वायु सेना के एक निष्ठावान् चिरपरिचित अधिकारी से बात हुई। वह बहुत स्वाध्यायशील हैं। सेवामुक्त होते ही वह कार्यक्षेत्र में सक्रिय हो जायेंगे। ऐसे बिखरे मोतियों को माला में पिरोना अपना काम है। आन्ध्र का एक युवा आर्य विद्वान् परोपकारी का आजीवन सदस्य बना है। उसे दिन-रात सोते-जागते धर्म प्रचार सूझता है। इस आर्यवीर रणवीर के कारण हमें कई अच्छे-अच्छे समाजसेवी युवक मिल रहे हैं। अमेरिका से एक महिला प्रोफेसर गुजरात यात्रा के कारण यहाँ मिलने न पहुँच सकी। विश्वविद्यालय मं कार्यरत उस देवी को मिशन के लिए अपना पूरा सहयोग मिलेगा। परोपकारी आज एक पाक्षिक नहीं यह महर्षि दयानद का एक सच्चा मिशनरी व आग्नेय योद्धा है जो नये-नये वीरों-वीराङ्गनाओं को खींच रहा है।

- **वेद सदन, अबोहर, पंजाब- १५२११६**

न्यायाधीश राजा को चाहिये कि धर्म्म से यज्ञ करने वाले सत्पुरुष पुरोहित के समान प्रजा का निरन्तर पालन करे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.१८

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : २५ अक्टूबर से ०१ नवम्बर, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोइ संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

शिक्षा

- योगेन्द्र दम्माणी

जब से मैंने क, ख, ग, घ, सीखा है तब से मैं यह सुनता आया हूँ कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। यह शायद ठीक भी है। शायद शब्द का व्यवहार इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मेरा यह सौभाग्य कम हो पाया कि उस प्रधानता को मैं देख सकूँ। इतने बड़े देश में सब तरह के कार्य होते हैं और किसी एक को कम या अधिक रूप में देखना उचित भी नहीं। हर एक से कुछ न कुछ सीखा जा सकता है। जैसे कृषि को ही लें। खेत खलिहानों में हम पाते हैं कि बच्चे अपने माता-पिता के साथ कृषि का कार्य करते हुए बड़े होते हैं उन्हें कृषि सिखाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। बहुत कम अक्षरी शिक्षा में भी ये लोग अपना जीवन-निर्वाह कर लेते थे, अब भी कर लेते हैं। कुछ ऐसा माहौल बनाया या बिगाड़ा गया कि अक्षरी शिक्षा का भूत इन पर भी सवार कराया जाने लगा और अब वो आत्महत्या करते हुए पाए जा रहे हैं। (कारण कुछ और भी हो सकते हैं।) हमारे यहाँ शिक्षा का अर्थ सिर्फ अक्षरी शिक्षा के ज्ञान को ही माना जाने लगा। शिक्षा का मतलब ए, बी, सी, डी, ही हो गया। लोहार के बेटे को यह बताने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी कि लोहे को पीटा कैसे जाता है, यह तो वह परिवार के साथ काम करते हुए स्वयं ही सीख जाता था। इसी तरह बुनकर, बढ़ई या और कोई भी अन्य हाथ से काम करने वाले के लिए भी यही बात लागू थी। भारत सोने का देश था क्योंकि सामान्य ज्ञान और शिल्पकला की वजह से लोग अपने सीमित दायरे में रहते हुए संचय करते थे और जीवन खुशी से व्यतीत करते थे। आज सब तरफ त्राहि-त्राहि हो रही है। शिल्पविद्या की शिक्षा पर फिर से बल दिया जा रहा है। क्योंकि हम पहले गलत दिशा में चलते हैं और फिर सुधार के कार्यक्रम लागू करते हैं। जब बच्चे अपने या अपने आसपास के लोगों के साथ जीविकोपार्जन की शिक्षा लेते थे तब उनको हमारे तथा कथित सभ्य समाज ने बाल मजदूरी का नाम दे दिया। इस दिशा में कार्य करने वालों की भावना अच्छी थी कि नहीं, उनके पास ऐसे कार्यों को करने या करवाने के पीछे किनका-किनका या किसका हाथ था, है यह तो इतिहास बतायेगा परन्तु यह सत्य है इसी एक मुद्दे ने इ देश से शिल्पकला रूपी स्वर्णिम भारत को हमसे छी लिया। अक्षरी शिक्षा के नाम पर हजारों स्कूल और कॉले खोले गये। हर चीज से कुछ न कुछ लाभ होता ही होग लेकिन इनकी हानि भी अब नजर आने लगी है और इ इन्टरनेट के जमाने में जब सब कुछ आन-लॉइन है तब त अब के अध-पढ़े युवक-युवतियाँ तो अधर में ही है। सार काम अब प्लास्टिक मनी कर देगी । किसी को किसी क आवश्यकता नहीं। सारे बाजार बन्द। घर से निकलन बन्द। यह आधुनिकता की हद है सुना है कि जापान क बच्चा, बचपन से ही छोटी-मोटी मोटर या अन्य यन्त्र बन लेता है क्योंकि वह बचपन से इन चीजों को करता है (जिसे हम चाइल्ड-लेबर कहते हैं।) उसे अंग्रेजी सीखने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता वह तो अपना समय शिल्पविद्या विकसित करने में लगाता है। चीनी आज किसी का मुहताज नहीं क्योंकि हर आदमी की चाहत कम है ह हाथ शिल्पकला का हाथ है और इस कारण उन्हें कम लागत पर सामान विकसित करना आ गया और इसलिए वे पूरे विश्व में छाते जा रहे हैं।

मैं अभी कुछ दिन पहले अमेरिका में था। वहाँ के मूल लोगों को अपनी भाषा के अलावा कोई और भाषा आती ही नहीं। वह चाहे अंग्रेजी हो या स्पेनिश। वहाँ भी बचपन से बच्चे काम करते देखे जा सकते हैं। चाइल्ड-लेबर का वहाँ कोई ऐतराज नहीं। क्योंकि अल्प शिक्षा प भी वो अपना जीवन बड़े आराम से व्यतीत कर लेते हैं दुनिया के किसी अन्य कोने में क्या हो रहा है या नहीं यह जानकारी उन्हें हो या न हों किन्तु अपने कार्य में वे दक्ष हैं और इसका एकमात्र कारण है कि बचपन से खेलते-खेलते हुए वे पा लेते हैं अपने जीवन यापन की जानकारी में प्रगाढ़ता। यह नहीं है कि भारत पहले ऐसा ही था हमारा अध्यात्म तो उनसे कई गुना आगे है किन्तु 'जब अपने ही घर को आग लग गई अपने चिराग से' तो कोई क्या करे । हमने आध्यात्म की शिक्षा बिल्कुल छोड़ दी चार आश्रमों के आधार पर २५ वर्षों तक शिक्षा तत्पश्चात

हस्थ, वानप्रस्थ और फिर संन्यास। यहाँ शिक्षा का गूढ़ ार्थ था (शिक्षा, जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जतेन्द्रियता आदि की बढ़ती होवे और उनसे अविद्या ादि दोष छूटें। उसी को शिक्षा कहते हैं- महर्षि दयानन्द रस्वती) अक्षरी शिक्षा के साथ-साथ जिनका जो कार्य । वह माता-पिता अपने बच्चों को वही ज्ञान, या उसके गाव वाला ज्ञान देते-देते उसे इतना दक्ष बना देते थे कि ह गृहस्थ का भार बड़े आराम से उठा सकता था। यदि स २५ वर्ष की अवधि को सब अपनाते तो कोई बेरोजगारी हीं होती। पचास वर्ष का होने पर व्यक्ति समाज सेवा में गते और अन्तिम पच्चीस पूरे विश्व के साथ-साथ अध्यात्म के लिए समर्पित होता। गृहस्थ इसका (समस्त आश्रमियों का) पूरा भार उठाता था। आज रिटायर करना पड़ता है, ोते नहीं हैं। यह नहीं सोचते कि अगर आप रिटायर नहीं ोंगे तो एक युवक का भाग्य आप छीन रहे हैं और इसका तिफल या तो रोगों में या अवसाद आदि में आखिर तो मलेगा ही। यह पहला या आखिरी जीवन नहीं, इसका ारण ये अक्षरी शिक्षा का तांडव है जो कि जानबूझकर मारे समाज को विघटित करने एवं कराने के उद्देश्य से विदेशी षडयन्त्रों के रूप में हमारे अपनों द्वारा कराया जाता । आप कोई भी इस तरह के कार्य में जिससे आपकी संस्कृति बिखरती है लग जाइए आप को कोई न कोई विदेशी पुरस्कार तो पुकार ही लेगा।

शिक्षा पद्धति को सही दिशा में ले जाना है तो इस ानसिकता से हमें हटना होगा कि चाइल्ड लेबर कुछ ोता है। हम अगर लेबर से मुंह मोड़ने लगे तो सिर्फ और सिर्फ बेरोजगार ही दिखेगा। हर अक्षरी शिक्षा के पण्डित को भी हाथ के हुनर जानने वाले की आवश्यकता अवश्य पड़ती है। तो उसकी कीमत ज्यादा और हुनर वाले की कीमत कम क्यों? यदि इस कीमत के फासले को कम कर दिया जाय तो फिर से लोग हस्तकला सीखने के लिए प्रेरित हो जाएंगे। शिक्षा वह भी है और यह भी -यह मूलमन्त्र है। सिर्फ स्कूलों, कॉलेजों की डिग्री काम करने का ठप्पा का ही महत्व तो नहीं होना चाहिए। इन डिग्री देने वालों को पहले तो किसी बिना डिग्री वाले ने ही दी होगी। इसमें जब कोई सन्देह नहीं तो फिर उसी से हम बैर क्यों कर बैठे। अंग्रेजी शिक्षा ने क्लर्क तो बहुत उत्पन्न कर दिये जो नौकरिया करने के लिए तत्पर हैं। महीने का मेहनताना मिल जाय बस। कोई यह भी नहीं सोचता कि हम उतना नौकरी देने वाले को दे या पा रहे हैं कि नहीं। किसी क्लर्क को आप रख कर देखिए। वह काम ठीक से करे या न करे। तन्खाह तो उसे सही समय पर चाहिए ही। हमने भी ऐसे अनगिनत कानून बना डाले कि नौकरी देने वाला ही व्यावहारिक रूप में मानो सबसे बड़ा गुनाहगार हो। इस मानसिकता से हटे बिना हम विदेशी शिकन्जे में फँसे रहेंगे। हम कमजोर रहें, अपनी संस्कृति से दूर रहें-यही उनकी नीति रही है। आज व्यवसाय वाले के सामने अनगिनत व्यवधान डाले जाते हैं। जहाँ अक्षरी शिक्षा नीति के कारण हजारों लोग बेरोजगार हैं, (जिसमें उनका दोष नहीं) वहाँ इतने कानून कि कुछ शुरुआत के पहले आप उन कानूनों को कैसे पालन करेंगे यही दिमाग खराब कर देता है। इस शिक्षा नीति ने हमें या तो सिर्फ राईट या सिर्फ लेफ्ट कर दिया है। समन्वय का इसमें अवसर ही नहीं है। कारोबार करने वाले और उसमें काम करने वाले दोनों का सही समन्वय भी तो आवश्यक है। किसी कारखाने के बन्द होने में दोनों पक्ष कहीं न कहीं उत्तरदायी होते हैं। बंगाल तो इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। यहाँ काम करने वाला समय के बाद पहुँचता है और जल्दी जाने की चेष्टा करता है। पैसे देने वाला भी जितना देर से व जितना कम दे सके यही सोचता है। वह भी क्या करे उधार ने जीवन तबाह कर रखा है। सब कुछ इतना उलट-पुलट क्यों हो रहा है इसे विचारने की आवश्यकता है। गूढ़ता में खोजने पर गलत शिक्षा, आध्यात्म रहित शिक्षा, हस्तकला रहित शिक्षा, अत्यधिक भौतिकता, कानून की गलत धाराएँ चारों ओर यही सब नजर आएँगे। हुनर की शिक्षा के स्कूल खोलिए, प्रेक्टिकल काम करने का मौका विकसित कराइये बचपन से ही। बच्चों को बढ़ई, लोहार, कुम्हार राजमिस्त्री, वैद्य, मैकनिक, कृषि आदि की डिग्री भी दीजिए। जो अक्षर ज्ञान चाहे उनके लिए वो और जो ये सब चाहें उनको ये। बच्चे सही शिक्षा प्राप्त कर सकें इसके उपाय करने की नितान्त आवश्यकता है। सिर्फ हमारी आज की कथित अक्षरी शिक्षा से समन्वय नहीं होगा। अति सर्वत्र वर्जयेत।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	रु. ६००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१६०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	४००.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१२०.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३००.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	३००.००
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	५०.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	१५००.००

विविध

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१००.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	३०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१२.००
८१.	सन्धिविषय	४०.००
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	४०.००
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में ......

१९६५ के भारत-पाक युद्ध की पृष्ठ भूमि तथा मेरे संस्मरण

-मेजर रतनसिंह यादव

१. **युद्ध की पृष्ठभूमि**- विशाल भारत का विखण्डन आरम्भ हुआ तो बर्मा, श्रीलंका आदि स्वतन्त्र राष्ट्र बनते चले गये। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति, भारत विभाजन का दुर्भाग्य पूर्ण तथा रक्त रंजित अध्याय भी १९४७ के आते-आते लिख दिया गया। इसके पश्चात् कई नवोदित राष्ट्रों में प्रजातन्त्रीय व्यवस्था से चुनी गयी सरकारों का सैनिक तानाशाहों ने तख्ता पलट दिया। बर्मा, श्री लंका तथा विशेषकर पाकिस्तान में तो प्रधानमन्त्री की हत्या तक कर दी गयी। ऐसे में प्रधानमन्त्री पद के लालच में भारत विभाजन तक का पाप करने वाले, महात्मा गाँधी के प्रिय जवाहरलाल नेहरु को लगा कि यह चारों ओर के पड़ोसियों के घर में लगी आग कहीं मेरी कुर्सी तक न आ पहुँचे। इससे भयभीत नेहरु जी ने भारतीय सेना को वर्ष प्रति वर्ष कमजोर करने का सिलसिला आरम्भ कर दिया। सेनाध्यक्ष जिसका स्थान वरीष्ठता क्रम में राष्ट्राध्यक्ष गवर्नर जनरल के बाद होता था, घटाकर मन्त्रीमण्डल के सदस्यों के भी नीचे गिरा दिया गया। रक्षा-बजट प्रतिवर्ष कम से कमतर होता गया। इसका दुष्परिणाम १९६२ में चीन के साथ हुए युद्ध में हमारी शर्मनाक पराजय के रूप में राष्ट्र ने झेला। हमारे सैनिकों के पास द्वितीय विश्वयुद्ध को पुरानी तकनीक की थ्री नॉट थ्री राइफलें एम्यूरेशन की घोर कमी, बर्फानी प्रदेश की हाड़कँपा देने वाली सर्दी से बचाव के कपड़ों का नितान्त अभाव यहाँ तक कि जूते तक न थे। ऐसे हालात में भी हमारी सेना की १३ कुमाऊँ रेजिमेंट की एक कम्पनी ने वीरता का जो इतिहास रचा, उसका उदाहरण विश्व के सैनिक इतिहास में दुर्लभ है। हमें गर्व है कि इस रेजांगला का स्वर्णिम इतिहास लिखने वाले हरियाणा के अहीरवाल क्षेत्र के वीर अहीर ही थे।

२. चीनी आक्रमण के तुरन्त पश्चात् आपातकाल घोषित कर दिया अब सेना की ओर कुछ-कुछ ध्यान दिया जाने लगा। पर तीन वर्ष से भी कम समय में रक्षा बजट पर कंजूसी बरतने वाली परम्परा की अभ्यस्त सरकार अधिक कुछ न कर पायी। तब तक चीन के चेले पाकिस्तान ने सोचा, चीन की तरह हम भी भारत को पीट लेंगे, काश्मीर छीन लेंगे। पर पाकिस्तान के इरादे इसलिए सफल नही हो सके कि हमने १९६२ के युद्ध से थोड़ा-बहुत सीख कर सेना को पहले से अधिक मजबूत कर लिया था। १९६५ के युद्ध में हम अपनी विजय पर कितना भी गर्व करें, पर यह कोई पूरी तरह निर्णायक युद्ध न था। काश्मीर में हम भले ही लाभ की स्थिति में थे, पर सीमा के अन्य क्षेत्रों में हमें हानि भी उठानी पड़ी थी।

३. पर काश्मीर में सेना के लहू ने जो क्षेत्र जीता लिया, उसे ताशकन्द में लिखे कागज की स्याही ने छीन लिया। जिस काश्मीर को हम भारत का अभिन्न अंग कह कर वर्षों से चिल्ला रहे थे, उस अभिन्न अंग को हमारे भीरु, दब्बू तथा समझौतावादी राजनैतिक नेतृत्व ने रूस के दबाव में वापिस शत्रु का अभिन्न अंग बना दिया। सेना के मनोबल पर इसका जो दुष्प्रभाव हुआ, उसे मेरे अग्रज कैप्टन नौरंग सिंह के शब्दों में जो उस युद्ध में सक्रिय भागीदार थे कहूँ ''हम सब रोते हुए वापिस आ गये'' अच्छा हुआ जो श्री लालबहादुर शास्त्री इस समझौते के आघात को न सह सके और अपने प्राण तक दे बैठे, वरना ताशकन्द से लौटने पर उनकी बहुत किरकिरी होती।

४. हमारी यह अदूरदर्शी, आत्मघाती समझौतावादी परम्परा सन् १९७१ के शिमला समझौते में भी बनी रही। हमने तो पाकिस्तान के एक लाख के लगभग सैनिक कैदी लौटा दिये, पर अपने लगभग ५० सैनिक कैदियों को पाकिस्तान से छुड़ाना भूल गये। न जाने उनका क्या हुआ होगा। जो जुल्फिकार अलि भुट्टो शिमला में गिड़गिड़ा रहा था, वही अपनी गली में जाते ही शेर बनकर दहाड़ने लगा। ''हम घास खायेंगे, पर एटमबम्ब बनायेंगे। हिन्दुस्तान के हजार टुकड़े करेंगे, हजार वर्ष तक लड़ेंगे।'' संयुक्त राष्ट्र संघ में हमारे विदेशमन्त्री सरदार स्वर्ण सिंह को 'इण्डियन डॉग' तक कहकर अपने पुरखों को भी अप्रत्यक्ष रूप से गाली दी। एटम बम्ब तो भारत से ज्यादा नहीं तो बराबर के तो बना ही लिए। और भी बनाने में लगे हुए हैं। हजार वर्ष तक लड़ने का सिलसिला चालू ही है।

५. मेरे सेना में आने का कारण- मेरे अग्रज सूबेदार

नौरंगसिंह भारत विभाजन से पूर्व की मियाँमीर की छावनी लाहौर में सेना में भरती हो चुके थे। मेरी पूज्य भाभी जी सरती देवी को फिरोजपुर, मेरठ, अम्बाला आदि सैनिक छावनियों में कभी-कभी उनके साथ रहने का अवसर मिला। गर्मियों में स्कूल की लम्बी छुट्टियाँ होने पर मैं भी उनके पास चला जाया करता। फौज का जीवन मुझे काफी पसन्द आता था। शिक्षा पूर्ण कर १९६१ में अपने गाँव के निकट स्थायी रूप से शिक्षक नियुक्त हो गया। १९६२ में चीन ने भारत पर धोखे से अचानक आक्रमण कर दिया। देश में आपातकाल घोषित कर दिया गया। भाई नौरंगसिंह अपनी बटालियन १६ पंजाब के साथ मोर्चे पर चले गये। भाभीजी घर लौट आई। मुझ से कहने लगी, ''रतन! जो तू ये मास्टरी बास्टरी की नौकरी कर रहा है, ये तो जिनानियों का काम है। देश पर आपत्ति आई है। तेरा भाई कम पढ़ा लिखा है, सूबेदार बन गया। तू तो बीस वर्ष का पढ़ा लिखा जवान है। फौज में ऑफिसर भी बन सकता है।''

तत्कालीन पंजाब सरकार ने (तब हरियाणा न बना था) अपने समस्त विभागों को सर्कूलर जारी कर सेना के लिए वालिण्टियर माँगे। मैंने अपने हैडमास्टर श्री सोमदत्त जी कौशिक को प्रार्थनापत्र देकर सेना के लिए मेरा नाम भेजने का अनुरोध किया। उनका उत्तर था ''इतनी ही तनखा फौज में मिलेगी (तब एक सौ रूपये थी) घर के पास की आराम की नौकरी छोड़कर क्यों मरने के लिए फौज में जाना चाहता है?'' मुझे मध्यकालीन वीर काव्य (आल्हा-उदल) के रचियता कवि जगनिक की पंक्तियाँ याद आ गई। मैंने कहा-

''बारह बरस तक कुकर जिये, और तेरह तक जिये सियार।

बरस अठारह छत्री जिये, आगे जिये को धिक्कार।।''

हम तो मरने के लिए ही बने हैं। मेरा नाम भर्ती कार्यालय महेन्द्रगढ़ में भेज दिया। मेरी योग्यतानुसार मुझे सेना-शिक्षा कोर में हवलदार के पद पर सीधे नियुक्ति मिली।

६. **युद्ध के संस्मरण**- १९६५ के युद्ध के समय मुझे जालन्धर कैण्ट स्थित सप्लाई डिपो केरियर की सुरक्षा तथा युद्ध के मोर्चे से घायल होकर आने वाले सैनिकों को सैनिक अस्पताल में भर्ती कराने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। मेरी सहायता के लिए पाँच नये-नये सैनिक भी थे।

अमृतसर से लाहौर जाने वाले मार्ग पर पाकिस्तान की सीमा में इच्छोगिल नहर है। इस नहर पर पाकिस्तानी सेना पक्के सीमेण्टेड बैंकरों में अमेरीकी आधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित हमारे मुकाबले के लिए पहले से ही तैयार थी। हमारे सेना की थर्ड जाट युनिट को नहर के पार पाकिस्तानी इलाके पर कब्जा करने का अत्यन्त दुस्साहसपूर्ण खतरे से भरपूर चुनौती पूर्ण टास्क सौंपा गया। बहादुर जाटों ने जान हथेली पर रखकर न जाने कितना रक्त बहाकर इच्छोगिल नहर के पानी को लाल कर दिया। सफलता मिली, पर मूल्य बहुत चुकाया। रात को घायलों से भरी ट्रेन अमृतसर से जालन्धर पहुँची। मैं एम्बुलेंस की अस्पताल की गाड़ी, स्टेचर तथा अपने साथी सैनिकों को लेकर घायल सैनिकों को स्टेचर पर रखने लगा तो एक बहादुर जाट सैनिक को अन्धेरे में ध्यान से देखा। उसके चेहरे में गोली धँसी हुई थी। सूजन से एक आँख बन्द हो चुकी थी। उसने हाथ उठाकर मुझे राम-राम कहने का प्रयास किया। मेरी आँखों में आँसू आ टपके। धन्य है वह वीर जवान, धन्य है वह सैनिक परम्परा जिसने ऐसी शोचनीय शारीरिक स्थिति में भी अभिवादन की सैनिक परम्परा को स्मरण रखा। वह मार्मिक दृश्य आज भी मेरी आँखों में सजीव है।

७. जालन्धर कैण्ट में रामामण्डी के निकट जी.टी. रोड से जाते हुए सैनिकों की गाड़ियों को आग्रहपूर्वक रोककर भोजन सामग्री, फल-फ्रूट तथा मालाओं से लादकर सिक्ख भाईयों ने राष्ट्रभक्ति का जो जोश दिखाया, वह अभूतपूर्व था। इण्डियन आर्मी जिन्दाबाद भारत माता की जय से आसमान गूंजता था। आज भले ही कुछ गिने-चुने, पाकिस्तान द्वारा बरगलाये सिक्ख युवक तथा राष्ट्र प्रेमी सिक्ख जनता द्वारा बहिष्कृत, थके माँदे, नेतृत्व तथा पद लोलुप तथाकथित नेता भारत के विरुद्ध विषवमन करें पर पंजाब तथा देश के विभिन्न भागों में सिक्खों की देशभक्ति में किसी को शक नहीं होना चाहिए। ऐसे गुमराह सिक्ख युवकों को सिक्ख जाति के गौरवपूर्ण इतिहास को स्मरण करते हुए गुरु अर्जुन देव तथा जहाँगीर, गुरु तेगबहादुर तथा औरंगजेब, गुरु गोविन्द सिंह और उनके चारों साहिबजादों तथा औरंगजेब के साथ बन्दा बहादुर और फर्रुखशयर के नाम न भूलने चाहिए। दूर इतिहास की गहराई में न जायें

तो देश विभाजन के समय पाकिस्तान से विस्थापित सिक्खों के साथ जो भयानक जुल्म किये गये, उनका आँखों देखा हाल बताने वाले कितने ही आज भी जिन्दा है। कितने ही राठौर, चौहान सिक्ख राजपूत, कितने ही सेठी, बाजवा, घुम्मन इस्लाम की खूनी तलवार का या तो शिकार हो गये या फिर सनम सेठी या जफर इकबाल राठौर बन गये । कोई उदाहरण है क्या जब किसी इस्लाम के अनुयायी ने विभाजन के समय अपना महजब भयभीत होकर बदला हो।

वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान १९७१ के युद्ध की पराजय का बदला, बंग्लादेश का बदला लेकर खालिस्तान का दिवास्वप्न दिखाकर सिक्ख-हितैषी होने का राजनैतिक पाखण्ड कर रहा है। अरे ये तो वही पाकिस्तानी हैं जिन्होने साझे भारत के साझे शहीदेआजम भगतसिंह के नाम पर लाहौर के चौराहे का नाम तक नहीं करने दिया। तर्क है पाकिस्तान की भूमि पर किसी गैरमुस्लिम के नाम पर कोई सड़क या स्मारक नहीं होगा।

८. सूर्यास्त होने को था। जालन्धर कैण्ट से कुछ दूरी पहले सतलुज नदी पर रेलवे पुल है। इसी रेल मार्ग से अमृतसर तक हमारी सेनाओं को रसद पहुँचायी जाती थी। पाकिस्तान के तीन छाताधारी सैनिक पास के गन्ने के खेतों में उतर गये। योजना रेल पुल को उड़ाने की थी। गाँववालों ने कैण्ट के हैडक्वाटर को सूचना दी। रियर में तो नाम चारे के सैनिक रहते हैं। उन्हें लेकर हमने गन्ने के खेतों को घेर लिया। पाकिस्तानी छाताधारियों को चेतावनी दी गयी कि जान बचाना चाहते हो तो हथियारों से मैगजीन अलगकर, गले में डालकर, हाथ ऊपर कर आत्म समर्पण कर दें। पहले दो चेतावनियाँ निष्फल रही। अन्त में तीसरी बार मशीनगनों से गन्ने के खेतों के छलनी करने का आर्डर सुनते ही एक लम्बा-चौड़ा पाकिस्तानी ऑफिसर निर्देश का पालन करते हुए बाहर आ गया। हमारे ऑफिसर ने उसके हथियार लेकर आँखों पर पट्टी तथा दोनों हाथ पीछे की ओर बाँध कर सड़क पर खड़ी जीप की ओर ले चले। कुछ तो मार्ग उबड़-खाबड़ था, कुछ आँखें बन्धी थी, तो कुछ बेचारा घबराया हुआ, धीरे-धीरे चल रहा था। हमारे मिलट्री-पुलिस के एक जवान ने उसे आगे धकेलते हुए पीठ पर एक घूंसा मार दिया। हमारे ऑफिसर ने उस मिलेट्री-पुलिस के जवान को बुरी तरह डाँटा कहा कि कैदी के साथ भी इन्सानियत का बर्ताव करना चाहिए। यह है हमारी संस्कृति और मानवता। दूसरी ओर हमारे कारगिल में कैद हुए कैप्टन सौरभ कालिया के साथ जिस दरिन्दगी और पाशविकता का बर्ताव किया, उसकी गूँज अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय तक गूँज रही है। कैप्टन कालिया का मृत शरीर जब लौटाया तो उसकी अगुंलियों के नाखून तक न थे। उस वीर के कान में गोली मारी गयी थी। जुल्म करने के निकृष्टतम तरीके तो शायद पाकिस्तानी सेना को ट्रेनिंग में सिखाये जाते हैं।

९. युद्ध के कारण अचानक सेना को बहुत बड़ी संख्या में सीमा पर आना पड़ा था। सप्लाई डिपो जालन्धर से स्थान्तरित कर सीमा के कुछ निकट ब्यास आ चुका था। खाद्य सामग्री भण्डारण के लिए फील्ड टैण्ट भी पर्याप्त न थे। ऐसे में हमारे कमाण्डिग ऑफिसर लेफ्टिनेन्ट कर्नल ए.के.गुहा ने बाबा राधास्वामी जी से प्रार्थना की। बाबा जी ने कहा-''सारा डेरा आपके आधीन है। डेरा देश से बड़ा नहीं है।'' हमने डेरा के कमरों में फौज का राशन भर दिया। युद्ध की समाप्ति पर वापिस जालन्धर लौटने से पहले बाबा जी का आभार व्यक्त करने सभी ऑफिसर तथा जवान गये। बाबा ने आशीर्वाद दिया।

१०. सितम्बर मास आ गया है। सरकार गर्व से १९६५ के युद्ध के पचास वर्ष पूरे होने पर विजय समारोह आयोजन करने जा रही है। पूर्व सैनिकों ने इस आयोजन के बहिष्कार की घोषणा पहले ही कर दी है, तो आयोजन हमारे वीर शिरोमणि मन्त्री करेंगे। दूसरी ओर इतने वर्षों में उस युद्ध में प्राण गँवाने वाले कितने ही सैनिकों की वीरागनाएँ तो अपने शहीद पतियों के पास कभी की जा चुकी है। बची-खुची भी इस बहरी सरकार के कानों तक आवाज पहुँचने तक जानी ही है। वे आज के पेंशन प्राप्त कर्त्ताओं की तुलना में एक चौथाई पेंशन पर अपनी वृद्धावस्था ढो रही हैं। हमारे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी और खजाना मन्त्री श्री जेटली के पास जम्मू काश्मीर सरकार के लिए विशेष पैकेज के लिए एक लाख करोड़ रूपये तो हैं पर पूर्व सैनिकों तथा उनकी विरांगनाओं के लिए मात्र ९१०० करोड़ ही हैं। हमारे आदरणीय प्रधान मन्त्री को जब भारतीय जनता पार्टी ने प्रधानमन्त्री पद का उम्मीदवार घोषित किया तो उनकी

पहली रैली रेवाड़ी में पूर्व-सैनिकों तथा अर्द्धसैनिक बलों ने आयोजित की थी। ऐसी रैली न भूतो न भविष्यति। मोदी जी ने वचन दिया 'एक रैंक एक पेंशन' मिलेगी। हमारे आदरणीय जनरल वी.के.सिंह भी मंच पर विराजमान थे। आज डेढ वर्ष होने को आया- न तो मोदी जी को अपने वचन याद रहे, न जनरल वी.के.सिंह को उन्हें याद दिलाने की फुर्सत है- मन्त्री जो बन गये। इसका नाम तो है- राजनीति पर है यह राज कुनीति-कुरीति।

हमारे माननीय सांसद पाँच वर्ष में कितने दिन संसद में उपस्थित रहे? संसद में आये तो क्या राष्ट्र हित के बिलों पर बहस में कितनों ने भाग लिया? क्या कभी प्रश्न पूछा? अपने इलाके की भलाई की कितनों ने माँग उठाई कई तो दूरदर्शन पर निद्रा लाभ लेते हुए दिखाये जाते हैं। संसद का कोई कर्तव्य पूरा किये बिना अच्छा भला वेतन, पेंशन तथा अन्य सुख-सुविधाऐं लेना न भूले। बात बिना बात संसद ठप्प करने वाले हमारे सांसद केवल एक बात को सर्वसम्मति से हाथ उठाकर एक मिनट में पास कर देते हैं- वह बिल है--सांसदों की वेतन वृद्धि तथा पेंशन वृद्धि।

सेना तो बहुत दूर की बात है संसद के दरवाजे पर प्राण देने वाले जवानों तक को कितना महत्व दिया, सब जानते हैं।

इंग्लैण्ड की महारानी का बेटा अफगानिस्तान के मोर्चे पर वर्षों से अपने देश के सम्मान के लिए लड़ रहा है। है कोई हमारे ६८ वर्ष के इतिहास में ऐसा उदाहरण जब किसी प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, या मन्त्री का बेटा भारत माता की रक्षा हेतु युद्ध क्षेत्र में गया हो। सभाओं में नारा लगायेंगे-जय जवान जय किसान। पर काम होगा- मर जवान - मर किसान।

वैसे भी सेना का एक जवान सरहद पर मरता है तो अप्रत्यक्ष रूप से एक किसान भी मरता है, क्योंकि मरने वाला एक किसान का बेटा है किसी राजनेता का नहीं।

अन्त में मैं हमारे देश के सभी नेताओं को नीति शास्त्र के प्रकाण्ड पंडित चाणक्य के शब्दों को याद दिलाना चाहता हूँ जिसकी नीति ने एक साधारण बालक चन्द्रगुप्त को भारत का सम्राट बनाया था।

''चन्द्रगुप्त! जिस दिन सेना तुम से अपने अधिकारों की माँग करने लग जाये, उस दिन तुम्हारे साम्राज्य का पतन आरम्भ हो जायेगा।''

कोई सुन रहा है क्या?

ऋषि मेला २०१५ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २०,२१,२२ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१५ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य: - १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

सूर्य नमस्कार- एक विवेचन

-विद्यासागर वर्मा, पूर्व राजदूत

सूर्य नमस्कार आसन के विषय में सम्पूर्ण भारत में एक विवाद खड़ा हो गया है, जिसका देश के हित में समाधान ढूंढना आवश्यक है। अन्तरिम् रूप से भारत सरकार ने सूर्य नमस्कार आसन को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भव्य सामूहिक कार्यक्रम से हटा दिया है।

सर्वप्रथम यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि केवल योग-आसन, योग नहीं। योग एक विस्तृत आध्यात्मिक पद्धति है जिसका ध्येय आत्मा और परमात्मा का मिलन है। पतंजलि ऋषि के योगदर्शन में आसन सम्बन्धी केवल चार (४) सूत्र हैं। आसन की परिभाषा है 'स्थिरसुखमासनम्' अर्थात् सुख पूर्वक स्थिरता से, बिना हिले-डुले, एक स्थिति में बैठना आसन है ताकि अधिक समय तक ध्यान की अवस्था में बैठा जा सके। प्रचलित योग-आसन हठयोग की क्रियाएँ हैं। हठयोग के ग्रन्थों में पशु-पक्षी के आकार के ८४ आसनों का वर्णन है, जैसे मयूरासन, भुजंगासन आदि। ये आसन स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद हैं परन्तु ध्यान लगाने के लिए उपयुक्त नहीं।

Rev. Albert Mohler Jr. Prsident South Baptist Theosophical Society ने कितने स्पष्ट शब्दों में योग को परिभाषित किया है, यह सराहने योग्य है "You may twidting yourself into pretzels or grasshoppers, but if there is no meditation or direction of consciousness, you are not practising Yoga." अर्थात् चाहे आप कितनी तरह से अपने शरीर को मरोड़कर एक वक्राकार की टिड्डा तरह बैठकर (गर्भासन) या एक शलभ के समान बनाकर बैठ जायें (शलभासन), यदि उस स्थिति में ध्यान की अवस्था नहीं है, चेतना की एकाग्रता नहीं है, उसे योग नहीं कह सकते।

सारांश में हम कह सकते हैं कि योग ध्यान की उस स्थिति का नाम है जहाँ आत्मा का परमात्मा से तादात्म्य हो जाता है। इस स्थिति का वर्णन सभी धर्मों के ग्रन्थों में पाया जाता है। उदाहरणार्थ कुरान शरीफ में कहा गया है- ''व फि अन्फुसेकुम अ-फ-ल तुबसेरुन'' अर्थात् मैं तुम्हारी आत्मा में हूँ, तुम मुझे क्यों नहीं देखते? मैं तुम्हारी हर श्वास में हूँ परन्तु तुम पवित्र नेत्र से विहीन हो, इसलिए देख नहीं पाते। यही तो योग विद्या का संदेश है। अहिंसा, सत्याचरण, चोरी न करना, दूसरों का हक न मारना, सभी शुभ कर्म ईश्वर की इबादत (ईश्वर प्रणिधान) भाव से करने से आत्मा पवित्र दृष्टि प्राप्त करता है और अपने अन्दर ईश्वर का साक्षात्कार करता है। अथर्ववेद (१२.१.४५) का कथन है 'जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्' अर्थात् पृथ्वी भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलने वाले तथा देशकाल के अनुसार भिन्न-भिन्न विश्वासों (Nation of Religion) का अनुसरण करने वाले जन-समुदाय का भरण (पोषण) करती है। विश्व के सभी धर्म सत्य, अहिंसा, भातृभाव, सदाचार की शिक्षा देते हैं ताकि मनुष्य का जीवन उत्कृष्ट बन सके और वे अन्ततः उस परमशक्ति से जुड़ सकें। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर सभी धर्मस्थलों पर ईश्वर है क्योंकि वह सर्वव्यापक है परन्तु तुम्हारी आत्मा केवल तुम्हारे शरीर में हैं, वहाँ नहीं है। मिलन तो किसी दो का तभी हो सकता है जहाँ दोनों मौजूद हों। वह स्थान केवल आपका शरीर है, वहीं आत्मा और परमात्मा का मिलन हो सकता है तभी तो पवित्र बाईबल में लिखा है " Your Body is the Temple of God" अर्थात् आपका शरीर ही परमात्मा का पूजा स्थल है। यही योग विद्या का सार है।

आसन और प्राणायाम योग के बहिरंग (Outer Shell) माने गये हैं। ये योग साधना में सहायक होते हैं जैसे आसन शरीर को निरोग रखते हैं और प्राणायाम मन की एकाग्रता को बढ़ाते हैं। योग का सम्बन्ध शरीर, मन और आत्मा से है। प्रकृति ने मानवमात्र को एक जैसा पैदा किया है, सभी को शरीर, मन और आत्मा दी है। मनुष्य चाहे साईबीरिया में पैदा हो जहाँ तापमान (-) ५०डिग्री सैल्सियस होता है चाहे सहारा के मरुस्थल में पैदा हो जहाँ तापमान (+)५० डिग्री सैल्सियस होता है, मानव शरीर का तापमान सभी स्थानों पर (+)३७ डिग्री सैल्सियस ही होता है। इसी प्रकार मनुष्य चाहे अमेरिका का रहने वाला हो या अफ्रीका का, क्रोध के आवेश में उसका रक्तचाप बढ़ जाता हैं, हृदयगति तेज हो जाती है, नब्ज भी तेजी से चलने लगती हैं और चेहरा लाल हो जाता है। जैसे कोई भी दवाई या बीमारी किसी के शरीर पर असर करने से पहले उसकी नागरिकता या धार्मिक आस्थाओं की जानकारी नहीं लेती, इसी प्रकार योग की क्रियाएँ मानवमात्र पर एक सा प्रभाव छोड़ती हैं। हाँ, जो अधिक निष्ठा से इन्हें करेगा, उसे अधिक

लाभ होगा, जो टूटे मन से करेगा, उसे कम लाभ होगा। यह व्यवस्था सभी विद्याओं पर एक सी लागू होती है।

योग-पद्धति एक धर्म निरपेक्ष, मानवमात्र हितकारी पद्धति है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। यह बात इसी से सिद्ध हो जाती है कि संयुक्त राष्ट्र की जनरल एसेम्बली में २१जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने सम्बन्धी प्रस्ताव न केवल सर्वसम्मति से पारित हुआ बल्कि १७७ देशों द्वारा अनुमोदित किया गया जिसमें मुस्लिम देश संगठन (OIC) के भी अधिकतर देश सम्मिलित थे। इससे पूर्व कैलीफोर्निया की एक अपील अदालत ने न्याय व्यवस्था दी कि सैनडीएगो काऊँटी के स्कूलों में सिखाए जा रहे योग से धार्मिक स्वतन्त्रता का उल्लंघन नहीं हो रहा। दैनिक हिन्दी समाचार 'हिन्दुस्तान' दिनांक ५ अप्रैल, २०१५ एवं अंग्रेजी समाचार पत्र 'टाइम्स ऑफ इंडिया' दिनांक ५ अप्रैल, २०१५ में छपे समाचार के अनुसार तीन सदस्यीय अपील अदालत ने योग के कार्यक्रम को धर्मनिरपेक्ष्य घोषित किया। इससे भी पूर्व अमेरिका के एक राज्य 'इलिनॉइस की संसद ने २४ मई, १९७२ के दिन एक प्रस्ताव (संख्या-६७७) पारित किया जिसमें योग की ध्यान पद्धति का गुणगान करते हुए इसे राज्य की सभी शिक्षा संस्थाओं में सिखाने के लिए अनुरोध किया गया एवं इसकी परियोजनाओं के लिए हर सम्भव योगदान देने का निर्देश दिया गया। इस प्रस्ताव में कहा गया कि अनुसंधानों से पाया गया कि ध्यान से मानसिक तनाव का कम होना, उच्च रक्तचाप का नीचे आना, श्वास रोग का ठीक होना, ध्यान लगाने वाले छात्रों का अध्ययन में प्रगति करना, अनगिनत रोगों में रोगियों का ध्यान लगाने से अन्यों की अपेक्षा शीघ्र ठीक होना, अफीम आदि के व्यसनियों (Drug Addicts) का ध्यान लगाने से व्यसन से छुटाकारा पाना आदि लाभ प्राप्त होते हैं।

योग पद्धति साधकों एवं सांसारिकों दोनों के लिए लाभप्रद है। योग दो प्रकार का है- लैकिक(Worldly) और आध्यात्मिक (Spiritual)। जो लौकिक विषय पर ध्यान लगाते हैं उन्हें लौकिक सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, जैसे न्यूटन ने गिरते हुए सेब पर ध्यान लगाया, विश्व को गुरुत्वाकर्षण का ज्ञान दिया। इसी प्रकार जो आध्यात्मिक विषय पर ध्यान लगाते हैं उनहें आध्यात्मिक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि सूर्य नमस्कार को लेकर समस्त योग विद्या को त्याज्य समझना उचित नहीं। वस्तुत: सभी मुस्लिम भाई ऐसा समझते भी नहीं हैं। हाँ, जो सूर्य नमस्कार आसन को आपत्तिपूर्ण मानते हैं, उनकी आपत्ति वाजिब हो सकती है, उचित हो सकती है। इस्लाम में जड़ की उपासना एवं ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना धर्म-विरुद्ध है। इस विचारधारा का सभी को सम्मान करना चाहिए। इसी के साथ-साथ समस्या का समाधान ढूंढ़ना चाहिए। भारत सरकार ने जो समाधान ढूंढ़ा है कि सूर्य नमस्कार को ही योगासनों से हटा दिया जाए, केवल क्षणिक, अल्पकालीन उपाय है, चिरस्थायी नहीं।

योग आसनों में तीन आसन स्वास्थ्य की दृष्टि से अतीव महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। वे हैं- शीर्षासन, सूर्य नमस्कार आसन और सर्वांगासन। इन तीनों से शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंग सुचारु रूप से कार्य करते हैं और सुदृढ़ होते हैं। अत: सूर्य नमस्कार आसन को सदा के लिए बहिष्कृत करना उचित नहीं होगा।

सूर्य नमस्कार आसन पर विवाद इसलिए है कि इसमें जड़ पदार्थ सूर्य के सामने सिर झुकाया जाता है। मेरा मत है कि यहाँ सूर्य का अर्थ सूर्य है ही नहीं, यहाँ सूर्य का अर्थ ईश्वर है। वेद में, संस्कृत भाषा में एवं अन्य भाषाओं में एक शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं। वेदों में ईश्वर को सूर्य, अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि कई नामों से वर्णित किया गया है। इसकी पुष्टि वेदों का जर्मन भाषा में अनुवाद करने वाले विश्वविख्यात दार्शनिक प्रो. एफ. मैक्समूलर भी करते हैं। अपनी पुस्तक India what It Can Teach Us? में वे कहते हैं "They (the Names of Deities like Indra, Varuna, Surya) were all meant to express the Beyond, the Invisible behind the Visible, the Infinite within the Finite, the Supernatural above the Natural, the Divine, Omnipresent, Omnipotent." अर्थात् वे (इन्द्र, वरुण, सूर्य आदि देवता वाचक शब्द) सभी परोक्ष के द्योतक थे, दृश्य के पीछे अदृश्य, सान्त के पीछे अनन्त, अपरा के पीछे परा, दिव्य, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् के द्योतक थे।

प्रो. एफ. मैक्समूलर की उपरोक्त घोषणा वेद के अन्त: साक्ष्य से भी सिद्ध होती है। यजुर्वेद (७.४२) का कथन है सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च अर्थात् सूर्य इस चेतन जगत् एवं जंगम (स्थावर) जगत् की आत्मा है। सूर्य तो स्वयं जड़ है और इस समस्त स्थावर जगत् का एक तुच्छ भाग है। वह जड़ एवं चेतन जगत की आत्मा (चेतन सत्ता) कैसे हो सकता है? नक्षत्र विज्ञान बतलाता है कि सूर्य

हमारी आकाश गंगा (Milky Way Galaxy) का एक सामान्य तारा (Star) है, जिसमें अरबों तारे हैं। इतना ही नहीं, सारे ब्रह्माण्ड (Universe) में अरबों ऐसी और इससे भी कई गुना बड़ी आकाश गंगाएँ हैं। इतने विशाल ब्रह्माण्ड की आत्मा एक अधना-सा सूर्य नहीं हो सकता। इससे सुस्पष्ट हो जाता है कि यहाँ सूर्य का अर्थ ईश्वर है। इसके अतिरिक्त हमारे धर्म ग्रन्थों में यह भी कहा गया है कि वे सूर्य, तारे, अग्नि आदि सभी उसी ईश्वर के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं - ''तस्यभासा सर्वमिदं विभाति'' कठोपनिषद् (२.२.१५) अर्थात् उस ईश्वर के प्रकाश से यह सब कुछ प्रकाशित होरहा है।

ईश्वर ही ब्रह्माण्ड की आत्मा है, केवल वेद ही नहीं कहता, अन्य सभी धर्म भी ऐसा ही मानते हैं, बड़े-बड़े दार्शनिक एवं वैज्ञानिक भी ऐसा ही मानते हैं। उदाहरणार्थ-

(१) हक जाने जहान अस्त व जहान जुमला बदन।

- सूफी शायर

ईश्वर विश्व की आत्मा है और यह समस्त विश्व उसका शरीर।

(२) The Universe is one stuperndous Whole
Whose Body Nature is. and God the Soul.

-Alexander Pop

यह ब्रह्माण्ड एक विशाल पूर्ण-कृति है।
प्रकृति जिसका शरीर है और ईश्वर आत्मा।

- एलेक्जेंडर पोप

(३) अल्लाहो बे कुल्ले शमीन मुहित

अल्लाहो नूर उस समावाति वल अर्द। - कुरान शरीफ

अल्लाह समस्त संसार को घेरे हुए है और उसमें व्याप्त है। उसका नूर द्यौलोक एवं पृथ्वी को प्रकाशित करता है।

(४) God said let there be light and there was light.

- The Holy Bible

ईश्वर ने कहा कि प्रकाश हो जाए और प्रकाश हो गया।

- पवित्र बाईबल

(५) सरब जोतिमहिं जाकी जोत।

- गुरु ग्रन्थ साहब

सारांश में, सूर्य नमस्कार आसन में सूर्य शब्द ईश्वर का द्योतक है। अथर्ववेद (२.२.१) की आज्ञा है। '**एक एव नमस्योऽवीक्ष्वीड्य:**' अर्थात् सभी लोगों द्वारा केवल एक ईश्वर नमन और स्तुति के योग्य है। क्योंकि सूर्य शब्द के लाक्षणिक-अर्थ ईश्वर न लेकर रुढ़ि-अर्थ-तारा ले लिया गया है, इसलिए यह भ्रम की स्थिति पैदा हुई है। सूर्य को एक प्राकृतिक शक्ति के रूप में देवता कहा गया है यहाँ यह स्पष्ट कर देना भी प्रासंगिक है कि देव या देवता वह है जो देता है या चमकता है। प्रकृति पदार्थ जो हमें लाभ पहुंचाते हैं या चमकते हैं देवता कहलाते हैं। वे केवल उस ईश्वर की शक्तियों को परिलक्षित करते हैं। तभी वेद में कहा गया है ''**अस्मिन् सर्वे: देवा: एकवृत्तो भवन्ति**'' अर्थात् सभी देवता (प्राकृतिक शक्तियाँ) उसी ईश्वर में समा जाते हैं। कुरान शरीफ में भी कहा गया है ''हे परवरदिगार। ये सूरज, चाँद, सितारे हमारे लिये (तुम्हारी खिलकत के लिए) तुम्हारे हुक्म में काम कर रहे हैं। कुदरत की इन निशानियों को देख कर, तुम्हारी ताकत, हिकमत और कारीगरी का अन्दाजा लगा सकते हैं।'' यही यजुर्वेद (३३.३१) में कहा है : **देवं वहन्ति केतव:।** दृशे विश्वाय सूर्यम्। अर्थात् सूर्य, चन्द्र आदि मानो परमदेव की पताकाएँ (केतव:= झण्डे, पताका) हैं उसके यश को संसार में फैलाती है और विश्व के लोगों को सूर्य के समान प्रकाशवान् ईश्वर को दर्शाती हैं। यहाँ भी सूर्य का अर्थ ईश्वर है।

अत: मेरा विनम्र सुझाव है कि सूर्य नमस्कार आसन का नाम ईश-नमस्कार आसन रख दिया जाए। मुझे आशा है कि हमारे मुस्लिम भाइयों को इसमें आपत्ति नहीं होगी क्योंकि ईश नमस्कार का अर्थ है अल्लाह को सजदा (Salutation to God) वैसे तो इसके साथ किसी प्रकर की प्रार्थना की आवश्यकता नहीं, अगर कोई करना भी चाहे तो निम्न प्रार्थना पर गौर किया जा सकता है- हे परमपिता। हमें शक्ति दो कि हम सूर्य और चाँद की भांति निरन्तर अपने कर्त्तव्य एवं परोपकार के कल्याणकारी मार्ग पर चलते रहें। (सूर्य नमस्कार का नाम बदलकर ईश-नमस्कार आसन करने से हम सहमत नहीं है। यह तो सीधा-सीधा मजहबी तुष्टिकरण होगा यह आसन उनके हित के लिए है। इसमें योग का प्रचार करने वालों का कोई स्वार्थ नहीं है- सम्पादक) लेखक भारतीय विदेश सेवा के सेवा निवृत्त सदस्य हैं। इन्होंने योगदर्शन पर काव्य व्याख्या लिखी है जिसका विमोचन मा. उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त ने अप्रैल, २००२ में किया था। इन्होंने कजाखस्तान में भारतीय दूतावास में कजाख लोगों को एवं वहाँ के राजनयिकों को योग की नि:शुल्क शिक्षा दी। योग पर दिये प्रपाठकों को द्विभाषी पुस्तक (अंग्रेजी, रूसी भाषा में) के रूप में छापा गया।

पता- १०९, आई.एफ.एस. विल्लाज, पी-६, बिल्डरज एरिया, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश-२०१३१० चलभाष: ९८७१७२४७३३

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३२ वाँ ऋषि बलिदान समारोह
दिनांक २०, २१, २२ नवम्बर २०१५, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है, जिसके कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३२ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- १६ नवम्बर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २२ नवम्बर को प्रात: १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेदवागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करना चाहते हैं, वे ३० अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २०, २१, २२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २० नवम्बर को परीक्षा एवं २१ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय ३० अक्टूबर, २०१५ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं, उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३२ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर,आचार्य विजयपालजी-झज्जर, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्विद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी - शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी, पं. कलानाथ शास्त्री-जयपुर, डॉ. जगदेव विद्यालंकार, पं. देवनारायण तिवाड़ी- कोलकाता, श्रीमती अमृत बहन- दिल्ली, श्री राकेश- अमृतसर, श्रीमती इन्दुपुरी-मोगा, आचार्य ओम्प्रकाश-आबूपर्वत, डॉ. रामनारायण शास्त्री- जोधपुर, डॉ. मुमुक्षु आर्य- दिल्ली, डॉ. नयन कुमार-परली महा., श्री माधव देशपाण्डे- मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. पूनमचन्द नागर- अहमदाबाद, डॉ. सच्चिदानन्द महापात्र- पुरी ओडिशा, डॉ. नरदेव गुड़े- लातूर, श्री विद्यामित्र ठकुराल- दिल्ली, श्री सुरेश अग्रवाल- प्रधान गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. रामचन्द्र- सोनीपत, डॉ. ओम्प्रकाश होलीकर- लातूर, स्वामी सुधानन्द- ओड़िशा, श्री सत्यवीर शास्त्री- रोहतक, डॉ. शिवदत्त पाण्डे- सुल्तानपुर, पं. धीरेन्द्र पाण्डे- जबलपुर, डॉ. सुकुमार आर्य- मैंगलूर कर्नाटक, डॉ. सुरेन्द्र- रोहतक, डॉ. धर्मवीर कुण्डू- हरियाणा, ब्र. नन्दकिशोर, डॉ. विरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. सुरेन्द्र- चण्डीगढ़ आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य प्रधान	धर्मवीर कार्यकारी प्रधान	ओम मुनि मन्त्री

अमर हुतात्मा श्रद्धेय भक्त फूल सिंह के ७४ वें बलिदान दिवस पर

- चन्दराम आर्य

जीविते यस्य जीवन्ति विप्राः मित्राणि बान्धवाः।
सफलं जीवनं तस्य आत्मार्थे को न जीवति।।

अर्थात् जिस व्यक्ति के जीवन से ब्राह्मण, मित्र गण एवं बान्धव जीवित रहते हैं उसका जीवन सफल माना जाता है। अपने लिए तो कौन नहीं जीता। अमर हुतात्मा श्रद्धेय भक्त फूल सिंह का जीवन भी ठीक उसी प्रकार का था।

जन्म व स्थान:- २४ फरवरी सन् १८८५ को हरियाणा प्रान्त के अन्तर्गत वर्तमान में सोनीपत जिले के माहरा ग्राम में चौधरी बाबर सिंह के घर माता तारावती की कोख से एक होनहार एवं तेजस्वी बालक ने जन्म लिया। तत्कालीन रीति-रिवाज अनुसार नामकरण संस्कार करवाकर बालक का नाम हरफू ल रखा गया। बालक का मस्तक बड़ा प्रभावशाली एवं आकृति आकर्षक रही जिससे पण्डितों ने उसको बड़ा भाग्यशाली बताया।

शिक्षा:- जब हरफूल आठ वर्ष का हुआ तो पिता ने अपने गाँव के समीप जूआं गांव के स्कूल में पढ़ने भेज दिया। उस काल में कृषकों के बच्चों का पढ़ना या पढ़ाना बड़ा कठिन कार्य था। बालक ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी उत्तम अंक अर्जित करके उत्तीर्ण की। परन्तु चौथी श्रेणी में बालक पर कुसं ग का रंग चढ़ गया और अनुत्तीर्ण रहा माता-पिता व गुरुजनों के काफी प्रयास से बालक न पुनः प्रवेश लिया औरबड़ी योग्यता से चतुर्थ श्रेणी उत्तीर्ण की। बालक को आगे पढ़ने के लिए ऐतिहासिक स्थल महरौली के स्कूल में भेजा। उस स्कूल से हरफूल ने पांच, छठी और सप्तम श्रेणी उत्तीर्ण की। उस स्कूल के मुख्याध्यापक की चरित्रहीनता के कारण पिता ने वह स्कूल छुड़ा कर खरखौदा के स्कूल में प्रवेश दिलवा दिया।

अद्‌भूत घटना एवं हरफू ल सिंह से फूल सिंह नाम पड़ना:- खरखौदा स्कूल के कूएं में वर्षा ऋतु में वर्षा की अधिकता के कारण जलस्तर ऊपर आ गया और पानी भी दूषित हो गया। मुख्याध्यापक जी ने छात्रों को बालटियों से पानी निकालने का आदेश दिया जब वेपानी निकाल रहे थे तो उनको कुएं में एक विषैला सर्प दिखाई दिया। मुख्याध्यापक के पास सर्प होने की सूचना दी गई। सब छात्र भयभीत हो गए। हरफूल सिंह को बुलाया गया। बालक हरफूल सिंह ने कहा गुरु जी एक मोटी रस्सी से टोकरी को बन्धवा कर कूएं में लटकवा दे और मुझे एक मजबूत डण्डा दे दें। मैं साँप को मारकर बाहर निकाल दूंगा। तदनन्तर टोकरी में हरफूल डण्डा लेकर बैठ गया। पानी से फूट भर ऊपर उसने टोकरी को रुकवा लिया। फिर बड़ी फूर्ती से उस साँप को उसने मार डाला । इसके बाद अपने साथियों को कहा कि टोकरी को खींच लो। उनके खींचने पर हरफूल लाठी पर साँप लटकाये बाहर निकले। बालक की इस वीरता तथा निर्भयता को देख मुख्याध्यापक दंग रह गये। वे प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले- बेटा फूल सिंह। तू वास्तव में वीर है, साहसी है। इस साहस के बाद से हरफूल को फूल सिंह नाम से पुकारा जाने लगा।

तदुपरान्त मिडिल श्रेणी को उत्तीर्ण कर फूलसिंह ने खलीला गाँव में रहकर पटवार की एक वर्ष तक तैयारी की। समय पर पानीपत में पटवार की परीक्षा देकर उसमें बहुत अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हुए। अब बालक फूल सिंह न रहकर फूलसिंह पटवारी कहलाने लगे।

गृहस्थाश्रम में प्रवेश:- पटवारी बने फूल सिंह को अभी एक ही वर्ष हुआ था। उनका बीस वर्ष की आयु में रोहतक जिलेके खण्डा गाँव की कन्या धूपकौर के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। माल विभाग की ओर से आप सन् १९०४ में पटवारी बनकर सबसे प्रथम सीख पाथरी गाँव जिला करनाल में आये। आप में कार्य करने की क्षमता स्वभाव से ही थी। आप अपने काम को पूरा करके ही विश्राम लेते थे। उस समय पटवारी को गाँव का राजा माना जाता था। छोटे से लेकर बड़े पुरुषों तक सभी आपका बहुत सम्मान करते थे। युवावस्था वाले दोष संस्कृत के महाकवि बाणभट्ट के कथनानुसार **''योवनम् स्खलितं दुर्लभम्''** अर्थात् यौवन का निर्दोष रहना बड़ा कठिन है। आप भी यौवन के बसन्त काल में मखमल लगा सुन्दर जूता, चमकीले कीमती वस्त्र पहनकर गलियों में घूमना,

हुक्का रखने वाले नौकर को साथ लेकर चलना अपनी शान मानते थे आप १९०७ में उरलाने में स्थायी पटवारी बनकर आये। वस्तुत: यहीं से पटवारी फूल सिंह का जीवनोद्देश्य परिवर्तित हुआ। अब आपने पटवार का काम के उपरान्त अतिरिक्त समय में जनता जर्नादन की सेवा करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया।

आर्य समाज में प्रवेश:- इसराना गाँव के पटवारी प्रीत सिंह उस समय के प्रसिद्ध आर्य समाजी माने जाते थे। वे प्रति सप्ताह पानीपत नगर में आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में जाया करते थे । आपका तथा पटवारी प्रीतसिंह का परस्पर बड़ा प्रेम था जब दोनों आपस में कभी मिलते तो बड़े प्रसन्न होते थे। देवयोग से एक बार पटवारी प्रीत सिंह व पटवारी फूलसिंह को पटवार के विशेष कार्य से पानीपत नगर में तीन मास तक इकट्ठा रहने का अवसर मिला। प्रीत सिंह आपमें विशेष गुण देखकर आपको आर्य समाजी बनाना चाहते थे। उन्होंने इसका एक उपाय सूझा। वे पानीपत आर्य समाज से भजनों की एक पुस्तक खरीद कर लाये और पटवारी फूल सिंह को पढ़ने के लिए दी। फूलसिंह भजनों को गाते हुए तन्मय हो जाते थे। प्रीत सिंह जी आपको समय-समय पर आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में चलने की प्रेरणा भी देते रहते थे। पटवारी प्रीत सिंह के साथ साप्ताहिक सत्संग में भी जाना आपने प्रारम्भ कर दिया। वहाँ पर विद्वानों, सन्यासियों, महात्माओं, प्रसिद्ध भजनोपदेशकों के व्याख्यान प्रवचन, मधुर गीत और भजन सुने तो आपकी अन्तर्ज्योति जाग उठी। अब तो आप आर्य समाज के प्रत्येक सत्संग में स्वयं जाने लगे तथा मित्रों को भी चलने की प्रेरणा देने लगे।

एक बार आप अपने मित्रों सहित आर्य समाज के प्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के वार्षिकोत्सव पर पधारे। वहाँ पर महात्मा मुन्शी राम (स्वामी श्रद्धानन्द) का मधुर उपदेश व शिक्षाप्रद हो रहा था। महात्मा जी कह रहे थे- ''मानव जीवन दुर्लभ है। इस जीवन को जो लोग भोग विलास तथा प्रदर्शन में नष्ट कर देता है, उसे बाद में पछताना पड़ता है। सुकर्म करो, कुकर्म से सदा दूर रहो। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है। भटके हुए लोगों को सुमार्ग पर लाओ।'' महात्मा जी के मुखारविन्द से आपने जब ये शब्द सुने तो आपने मन ही मन निश्चय किया कि मैं आज से ही पटवार के अतिरिक्त समय को आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में लगाऊँगा।

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार से आप आर्य समाज के दीवाने बन कर आये । फिर आपने नियम पूर्वक आर्य समाज का सदस्य बनने का निश्चय किया। आपने इसके लिए योग्य गुरु की तलाश थी। आपकी इच्छानुसार पानीपत आर्य समाज उत्सव में पण्डित ब्रह्मानन्द जी (स्वामी ब्रह्मानन्द)जी के दर्शन हुए। उनसे आपने अपने मन की इच्छा प्रकट की। पण्डित जी ने भी श्रद्धालु शिष्य में दिव्य ज्योति के दर्शन हुए। पण्डित जी ने यज्ञ के उपरान्त आपका यज्ञोपवीत संस्कार कराकर आपको शिक्षाप्रद उपदेश देकर लाभान्वित किया । उसी दिन से आप आर्य समाज के सदस्य बन गये।

वैदिक धर्म का प्रचार एवं जनता की सेवा:- आर्य समाज के रंग में रंगे हुए फूल सिंह पटवारी सरकारी काम के अतिरिक्त अपना सारा समय समाज सेवा में लगाने लगे महात्माओं, सन्यासियों, विद्वानों का अपके यहाँ डेरा लगा रहता था। आप पटवार भवन में धर्म-कर्म चर्चा के साथ-साथ गांव के आस-पास के विवाद भी सुलझाने लगे। जब आप उरलाना में पटवारी थे तो उस वर्ष वर्षा न होने के कारण सारी फसलें नष्ट हो गई थी तो आपने उसी गाँव के मुसलमान राजपूत से पाँच हजार रूपये उधार लेकर सभी ग्रामवासियों की मालगुजारी सरकारी खजाने में जमा करा दी। ग्राम वासियों के भी संकट मोचक को उक्त राशि सहर्ष एवं सधन्यवाद वापिस कर दी।

प्लेग की महामारी में जनता जनार्दन की महान सेवा का व्रत लेना:- सन् १९०९ में सारे भारत में प्लेग की महामारी सर्वत्र फैल गई। इस महामारी से कोई गाँव या नगर अछूता न बचा था। आप उन दिनों उरलाना गाँव में पटवारी थे। उरलाना गाँव भी महामारी से बचा न रहा। इस महामारी के प्रकोप से चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ था। रोगियों को सम्भालने वाला कोई नहीं था।

माता-पिता अपने दिल के टूकड़े को, भाई-बहिन को पति-पत्नी को अनजान से बनकर भूल गये थे। ऐसे भयंकर संकट के समय आपने उरलाना गाँव के लोगों की सहायता करने का निर्णय लिया। इस घोर संकट काल में सब आफिसर अवकाश लेकर अपने-अपने परिवारों को सँभालने के लिये अपने-अपने घरों में चले गए पर सेवा भावी फूल सिंह ने अपने कुटुम्ब को भुलाकर उरलाना गाँव के दु:खियों, रोगियों को ही अपना परिवार मानकर उनकी दिन-रात सेवा की। आपके आफिसर भी आपकी

निस्वार्थ सेवा से बहुत प्रभावित हुए।

मनुष्य पर संकट सदा नहीं बना रहता है। वह मनुष्य की परीक्षा का समय होता है। एक वह समय आता है कि आकाश के बादलों के हटने के समान उसके संकट स्वयंमेव दूर हो जाते हैं। पटवारी जी ने भी देखा कि उनके पुरुषार्थ से और प्रभु की अपार कृपा से प्लेग के दिन समाप्त हुए। बिछुड़े हुए लोग परस्पर आकर मिले। बेटे ने बाप को, पति ने पत्नी को, भाई ने भाई को पहचाना तथा परस्पर गले मिले। पता नहीं जो महामारी आई थी वह कहाँ चली गई। सब गाँवो वालों ने पटवारी जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की एवं पावों में गिरकर उनकी सेवा और त्याग और साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की। पटवारी जी ने भी उन सबको उठाकर अपनी छाती से लगाया।

रिश्वत छोड़ने का दृढ़ निश्चय:- आपके ऊपर आर्य समाज के सिद्धान्तों, महात्माओं व विद्वानों के उपदेशों का इतना प्रभाव हुआ कि आप आत्मशोधन के लिए भी उद्यत हो गये। इसके लिये रिश्वत छोड़ने की एक महत्वपूर्ण घटना इस प्रकार हुई कि बुआना लाखू गाँव में एक बनिये ने क्रुद्ध होकर अपनी स्त्री को मार डाला । इसकी सूचना जब पुलिस को लगी वह वहाँ पहुँची पुलिस को देख बनिया बहुत डरा, आपकी शरण में आकर बोला पटवारी जी आप चाहे कितना ही रूपया मुझसे ले लें आप नम्बरदारों की सहायता से मेरा छुटकारा पुलिस से करा दें। पटवारी जी ने ६०० रूपया लेकर बनिये को छुड़ाने का वायदा किया। पटवारी ने नम्बरदारों की सहायता से उस बनिये का पुलिस से पिण्ड छुड़वा दिया। रिश्वत में लिए हुए तीन सौ रूपये पटवारी जी के तथा तीन सौ नम्बरदारों के निश्चित हुए थे। आपने ३०० रुपये स्वयं लेकर शेष रूपये नम्बरदारों में बाँट दिये। सब नम्बरदारों ने अपना-अपना भाग ले लिया परन्तु दृढ़ आर्य समाजी नम्बदार ख्याली राम ने रिश्वत का रूपया लेना स्वीकार न किया। पूछने पर उन्होंने कहा रिश्वत का रुपया बहुत बुरा होता है, जिसे इसकी चाट लग जाती है फिर इससे छुटकारा कठिन है। आपने १९१४ में रिश्वत न लेने की प्रतिज्ञा की तथा जो रिश्वत लेता था उसका डटकर विरोध करते थे। रिश्वत लेने को आप महापाप कहने लगे।

थानेदार से रिश्वत वापिस दिलवाना:- जिन दिनों आप बुवाने में पटवारी थे उन दिनों एक थानेदार ने कात गाँव के लोगों को डरा-धमकाकर उनसे आठ सौ रूपये ले लिये । उसी समय कात से एक आदमी भागा हुआ बुवाना ग्राम आया और आपके सामने सारी घटना कह सुनाई। आप उसके साथ कात गाँव आये और गांव वालों ने बताया कि आठ सौ रूपये थानेदार के मूढ़े के नीचे दबे हुए है। आपका मुख-मण्डल क्रोध से रक्त-वर्ण हो गया और आपने थानेदार को कड़क कर कहा थानेदार बना फिरता है, गरीब ग्राम वासियों को तंग करके रूपये हड़पने में तुझे शर्म नहीं आती। ऐसा कहकर थानेदार को मूढ़े से नीचे धकेल दिया ओर कमर पर जोर से लात मारी ओर कहा पापी निकल यहाँ से नहीं तो तू जीवित नहीं बचेगा। वह थानेदार आपकी गर्जना सुनकर थर-थर काँपने लगा गिड़गिड़ाकर घोड़े पर सवार होकर चुपचाप थाने की ओर चला गया। इसके बाद उसमें कोई भी अदालती आदि कार्यवाही करने का साहस नहीं रहा। ऐसी उदाहरणें अन्य भी हैं।

समाज सेवा करने की अभिलाषा से पटवार से त्याग पत्र देने की इच्छा:- आपका जीवन आर्य समाज की सेवा के लिए अर्पित हो गया। आप सोचने लगे दीन-दुखियों की सेवा करनी है तो पटवार का मोह छोड़ना होगा। इससे भी समाज सेवा में बाधा उपस्थित होती है। कई दिन विचार करते हुए आपने यह बात अपने प्रेमियों से भी कही तो उन्होंने सलाह दी शीघ्रता से कार्य करना लाभप्रद नहीं होता अत: आप त्याग पत्र न देकर एक वर्ष का अवकाश ले लें । आपको साथियों की यह बात समझ आ गई। आपने विचार किया इस अवकाश काल में स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के आश्रम में रहकर सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर आर्य समाज के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त किया जाये। ऐसा निश्चय करके सन् १९१६ दिसम्बर मास में एक वर्ष का अवकाश प्राप्त कर अपना चार्ज बरकत अली नाम के पटवारी को सौंप दिया। ऐसा करके निश्चित होकर आप पटवार गृह में ही सो गये।

सम्भालका गाँव में गोहत्या स्थल (हत्थे) को रोकना:- अपने जीवन को देश के लिये अर्पण करने का मानचित्र स्वसंकल्पों से चित्रित कर अभी पटवार घर में सोये ही थे कि उनके परिचित मित्र सम्भालका निवासी चौ. टोडरमल की आवाज सुनाई दी। उन्होंनें कहा, भक्त जी हम बड़े धर्म संकट में हैं। इधर कुआँ है, उधर खाई है। एक ओर धर्म की पुकार है दूसरी ओर सरकार का विरोध

है। हमारे गाँव सम्भालका में गौ-हत्था खोलने की मुसलमानों को स्वीकृति मिल गई है और कल ही इसकी नींव रखी जायेगी। आपने श्री टोडरमल की बात ध्यान से सुनी और ओजस्वी वाणी में कहा कि हत्था नहीं खुलेगा। तुम जाओ, तुम से जो बन सके तुम भी करो।

प्रात:काल ही आपने अपने पटवार गृह में बुवाना गाँव के प्रतिष्ठित पुरुषों को इकट्ठा किया और उनके सामने श्री टोडरमल की बात सबके सामने कही। गाँव वालों ने कहा ''हम सब आपके साथ हैं, बताओ हमने क्या करना है?'' भक्त जी ने कहा ''पहले तो हम शान्ति से निपटाना चाहेंगे अगर ऐसे काम नहीं चला तो लड़ाई भी लड़नी पड़ेगी। बिना हथियारों के लड़ाई नहीं लड़ी जाती है। हथियारों के लिए १२०० रु. की आवश्यकता है। दो दिन में ही गांव वालों ने १२०० रु. एकत्रित कर आपके चरणों में अर्पित कर दिए। आपने उन रूपयों से उपयोगी हथियारों का संग्रह किया। तदन्तर प्रत्येक गांव में आदमी भेजकर निर्धारित तारीख व स्थान पर हत्था तोड़ने के लिए चलने का सन्देश भेजा। आपके सन्देश को सुनक र ग्रामों से ग्रामीण भाई दलबल समेत सम्भालका गाँव की ओर चल पड़े। जब मुसलमानों को ग्रामीणों की इस चढ़ाई का पता चला तो वे भागकर कस्बे के डिप्टी कमिश्नर की सेवा में पहुँचे और ग्रामवासियों के आक्रमण की सूचना डिप्टी कमिश्नर महोदय को दी।''

कमिश्नर महोदय ने क्रुद्ध जनता की क्रोध एवं जोशपूर्ण आवाज सुनी, कोई कह रहा था यदि यहाँ हत्था खुला तो खून की नदी बह जायेगी, कोई कह रहा था कि हमारी लाशों पर ही हत्था खुल सकेगा। हम किसी भी कीमत पर हत्था नहीं खुलने देंगे। क्रुद्ध जन समुदाय को शान्त करते हुए कमिश्नर ने घोषणा की ''प्यारेग्राम वासियों। मैं आपकी भावना को जानता हूँ मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यहां पर हत्था नहीं खुलेगा।'' आप सब अपने-अपने घरों को जाओ। किन्तु जिलाधीश कीघोषणा के उपरान्त भी कुछ क्रुद्ध वीर युवक आक्रमण की प्रतीक्षा में बाग में छिपे बैठे थे। आपने एक टीले पर चढ़कर चारों ओर चद्दर घुमाकर सबको संकेत किया कि भाइयों जिस उद्देश्य से हम आये थे वह काम हमारा पूरा हो गया और आप इस स्थान को छोड़कर अपने-अपने घरों को चले जायें। कवि ने ठीक ही कहा है-

इरादे जब पाक होते हैं, सफलता चलकर आती है।
चट्टानें थरथराती हैं और समुद्र रास्ते देते हैं।

पटवारी बरकत अली की नीचता:- इस घटना को साम्प्रदायिक रंग देने के लिये मुसलमान पटवारी पदवृद्धि के लोभी बरकत अली ने उसी हल्के के अब्दुल हक नामक गिरदावर के साथ मिलकर एक सम्मिलित रिपोर्ट तैयार की। उस रिपोर्ट में इस विप्लव का मुखिया आपको बतलाते हुए यह सिद्ध किया कि जाटों को भड़का कर मुसलमानों को खत्म करने की योजना थी और धीरे-धीरे अंग्रेज सरकार का तख्ता उलटना पटवारी फूल सिंह चाहता था। अत: पटवारी फूल सिंह को बागी घोषित कर जल्दी से जल्दी बन्दी बनाया जाये। इस दोनों की रिपोर्ट पर श्री गोकुल जी नम्बरदार बिजावा, श्री बख्शी राम परढ़ाणा, श्री मोहर सिंह सम्भालका श्री टोडरमल सम्भालका, श्री चन्द्रभान और सूरज भान सहित सबको बन्दी बना लिया। सब से पाँच-पाँच हजार की जमानत लेकर छोड़ा गया।

आप इन मुकदमों की पैरवी के लिए करनाल के वकीलों व रोहतक के वकीलों के पास गये । किसी में भी सरकार का सामना करने का साहस न हुआ। अन्त में आप निराश होकर ग्रामीण जनता के परम सेवक दीनबन्धु श्री चौधरी छोटूराम जी की सेवा में उपस्थित हुए उनके सामने जो घटना जैसी घटी थी वह सब सुना डाली और यह भी कहा सब स्थानों पर घूम चुका हूँ कोई भी वकील इस मुकदमें की पैरवी करने के लिए तैयार नहीं है। भक्त जी की बातों को सुनकर उन पर गहरा विचार कर चौधरी छोटूराम जी ने उनसे कहा- ''भक्त जी, मैं आपके मुकदमे की पैरवी करुंगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप इस मुकदमे से मुक्त हो जाओगे। यह मेरा निश्चय है आप सर्वदा निश्चित रहें। और मैं आपसे इसकी फीस भी नहीं लूँगा।''

चौधरी साहब ने अपने वचन के अनुसार उस मुकदमे की पैरवी करने में बड़े वाक् चातुर्य से काम लिया। उन दोनों मुसलमानों की रिपोर्ट की धज्जियाँ उड़ा दी। जब आप पैरवी करते थे तब सुनते ही बनता था। उन्होंने कानून की दृष्टि से मुकदमे का अध्ययन अति सूक्ष्मता से किया हुआ था। विरोधी वकील उनके द्वारा प्रस्तुत तर्कों को काट न सके। आपकी प्रबल पैरवी से भक्त जी के साथ ही अन्य सब साथी अभियुक्त भी मुक्त हो गये।

शेष भाग अगले अंक में......

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ अगस्त २०१५ तक)

१. डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली व श्रीमती कमला देवी, अजमेर २. श्रीमती संध्या पाल, रुड़की, उत्तराखण्ड ३. श्री यश पाल, जयपुर, राज. ४. श्री सत्यनारायण व श्री सतीश ईनानी, अजमेर ५. श्री शिव सिंह राठौड़, जयपुर, राज. ६. श्री अनुरूप मकवाना, नई दिल्ली ७. सुश्री पूजा मकवाना, नई दिल्ली ८. श्री सुमेर चौधरी, सुमेरपुर, राज. ९. श्री ब्रजेश कुमार, इलाहाबाद, उ.प्र. १०. श्री राजपाल शास्त्री, चुरु, राज. ११. आर्यसमाज राउरकेला, उड़ीसा १२. श्री हरीश कोहली, शिवपुरी १३. श्री विशन सिंह, विदिशा, म.प्र. १४. डॉ. देवेन्द्र, पानीपत, हरियाणा १५.श्री रामलाल अरोड़ा, अजमेर १६. श्री मुमुक्ष मुनि, अजमेर १७. श्री ज्योति प्रकाश, जबलपुर १८. श्री विजय खोड़े, देहरादून १९. श्री अभिनव गोयल, जीन्द, हरियाणा २०. श्री नरपत सिंह आर्य, जालौर, राज. २१. श्रीमती उषा आर्य व रमेशमुनि, अजमेर २२. श्री वेदप्रकाश, अजमेर २३.श्री आनन्द मुनि, हिसार, हरियाणा २४. श्री सत्यवीर आर्य, भरतपुर, राज. २५. श्री वीरेन्द्र सिंह, भरतपुर, राज. २६. श्री हेमन्त आर्य, अजमेर २७. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली २८. स्वास्तिकामा चेरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र २९. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली ३०. श्रीमती श्वेता दत्त, आगरा, उ.प्र. ३१.श्री शिव कुमार मदान, दिल्ली ३२. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय ३३. श्रीमती दीपमाला, पंचकुला, हरियाणा ३४. श्री दीपचन्द आर्य ईण्डस्ट्रीज, दिल्ली ३५. श्रीमती रमा नवाल, अजमेर ३६. श्री अनुपम आर्य, नई दिल्ली ३७. भाव्या नवाल, ब्यावर ३८. श्री जेठमल राठी, जोधपुर, राज. ३९. श्रीमती सीमा गुप्ता, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ ४०. श्रीमती उर्मिला राजोतिया, अजमेर ४१. श्रीमती प्रेमलता गुप्ता, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ अगस्त २०१५ तक)

१. डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली व श्रीमती कमला देवी, अजमेर २. विंओग डिकोस्टा, अजमेर ३. आर्यसमाज, सोनीपत, हरियाणा ४. श्रीमती रामप्यारी, अजमेर ५. श्री मंजू काकानी, अजमेर ६. श्री सत्यनारायण व श्री सतीश ईनानी, अजमेर ७. श्री गिरधारी लाल पारीक, सरदार शहर ८. श्री वीरेन्द्र व श्री विष्णु दाधीच, अजमेर ९. श्री ओमप्रकाश अजमेरा, अजमेर १०. श्रीमती प्रेमवती आर्य, अजमेर ११. श्री अभिनव गोयल, जीन्द, हरियाणा १२. श्री कृष्ण सिंह राठी, झज्जर, हरियाणा १३. श्री हेमन्त कुमार आर्य, अजमेर १४. श्रीमती उषा आर्य व श्री रमेश मुनि, अजमेर १५. श्री अनीस, अजमेर १६.श्री महेश पराशर, अजमेर १७. श्रीमती सुशीला शर्मा, अजमेर १८. श्रीमती मीना चौधरी, गुडगांव, हरियाणा १९. श्रीमती सुदिव्या, गुडगांव, हरियाणा २०. रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली २१. श्री सुदर्शन कपूर, पंचकूला, हरियाणा २२. श्रीमती बिरजू देवी, जैसलमेर, राज. २३. श्री मयंक कुमार, अजमेर २४. श्री करसन सिंह राठी, झज्जर, हरियाणा २५. श्री रमेश मुनि, अजमेर २६. श्री सोमित्र आर्य गुप्ता, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ २७. श्री रिषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट, पंजाब २८. श्रीमती उर्मिला राजोतिया, अजमेर २९. श्री बिशनदास शर्मा, शिमला।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जीव फल भोगने में परतन्त्र क्यों?

– इन्द्रजित् देव

प्रत्येक जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। वह चाहे जैसा कर्म करे, यह उसकी स्वतन्त्रता है। अपने विवेक, ज्ञान, बल, साधन, इच्छा व स्थिति के अनुसार ही कर्म करता है परन्तु अपनी इच्छानुसार वह फल भी प्राप्त कर ले, यह निश्चित नहीं। इसे ही दर्शनान्दु सार फल भोगने में परतन्त्रता कहते हैं।

कर्म का कर्त्ता व इसका फल भोक्ता जीव है परन्तु वह फलदाता नहीं। यही न्याय की माँग है। फलदाता स्वयं बन जाता तो पक्षपात व अन्यय सर्वत्र व्याप्त हो जाएगा। हम लोग-समाज में देखते हैं कि हम कर्म किए बिना फल चाहते हैं। फल भी ऐसा चाहते हैं जो सुखदायक हो। यदि हम चाहते-न-चाहते हुए पाप कर्म कर लेते हैं तो भी फल तो पुण्यकर्म का चाहते हैं-

फलं पापस्य नेछन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः।
फलं धर्मस्य चेछन्ति धर्मं न कुवन्ति मानवाः।।

हमारी इच्छानुसार व्यवस्था हो जाए तो अनाचार, अन्याय व अव्यवस्था का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। अतः ईश्वर ने जीव को कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान कर रखी है तथा कर्मों का फलदाता वह स्वयं ही है। इससे व्यवस्था ठीक रखन में सहायता मिलती है। यदि हमारी इच्छानुसार ही व्यवस्था हो जाए व हम न्याय व सत्य को तिलाञ्जलि देकर कर्म करेंगे तो समाज में अनाचार, अव्यवस्था व अत्याचार का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। अतः ईश्वर ने जीवों को केवल कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान की तथा कर्मफल का अधिकार अपने पास ही रखा है। फल भोगने में परतन्त्रता का दूसरा कारण यह है कि जीव सर्वज्ञ नहीं है। दूसरों के कर्मों को जानना तो दूर की बात है, वह अपने सभी कर्मों को भी पूर्णतः नहीं जानता। कर्मों की संख्या न उनका शुभ-अशुभ होना, पापयुक्त या पुण्ययुक्त होना, किस कर्म का क्या फल है- इन बातों की जानकारी जीव को नहीं होती। मनुष्य योनि में रह रहे जीव को यदि तनिक-सा ऐसा ज्ञान हो भी जाए पर मनुष्येतर योनियों में तो ज्ञान होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। मनुष्येतर योनियों में जीव केवल आहार, निद्रा, भय तथा मैथुन- इन चार कर्मों से अधिक कर्म करने की क्षमता, ज्ञान व इच्छा नहीं होती। मनुष्य योनि में आया जीव उपरोक्त चार कर्मों के अतिरिक्त धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य आदि से युक्त कर्म करने का सामर्थ्य रखता है परन्तु वह भी एक सीमा तक। अपनी सीमा में रहकर भी अपने सब कर्मों को स्मरण रखना व उनका निर्णय करने की पूर्ण क्षमता जीव में है ही नहीं।

तीसरा कारण यह है कि जीव को फल प्राप्त करने हेतु शरीर, आयु व भोग पदार्थों की आवश्यकता है। शरीर रहित जीव को यह भी बोध नहीं होता कि वह है भी अथवा नहीं। प्राण, ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, मन व बुद्धि आदि के बिना वह ऐसे रहता है, जैसे अस्पताल में मूर्च्छित अवस्था में एक व्यक्ति पड़ा रहता है। तब उसे अनुभव नहीं होता कि वह है भी अथवा नहीं। वह कौन है, कहाँ है, क्यों है, यह भी ज्ञात नहीं होता। अंग-प्रत्यंग, श्वास-प्रश्वास आदि को प्राप्त करके ही जीव फल भोगने में समर्थ होता है। ये वस्तुएँ उसे पूर्व जन्मों के कृत कर्मों के अनुसार ही प्राप्त होती हैं।

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निम्नलिखित लेख विषय को अधिक स्पष्ट करता है-

प्रश्न- जीव स्वतन्त्र है वा परतन्त्र?

उत्तर- अपने कर्त्तव्य- कर्मों में स्वतन्त्र और ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है। 'स्वतन्त्र कर्त्ता' यह पाणिनीय व्याकरण का सूत्र (=अष्टा. १/४/५४) है जो स्वतन्त्र अर्थात् स्वाधीन है, वही कर्त्ता है।

प्रश्न- स्वतन्त्र किसको कहते हैं?

उत्तर- जिसके अधीन शरीर, प्राण, इन्द्रियाँ और अन्तःकरण आदि हों। जो स्वतन्त्र न हो तो उसको पाप-पुण्य का फल प्राप्त कभी नहीं हो सकता क्योंकि जैसे भृत्य, स्वामी और सेना, सेनाध्यक्ष की आज्ञा अथवा प्रेरणा से युद्ध में अनेक पुरुषों की मार के भी अपराधी नहीं होते, वैसे परमेश्वर की प्रेरणा और अधीनता से काम सिद्ध हों तो जीव की पाप वा पुण्य न लगे। उस फल का भागी भी प्रेरक परमेश्वर होवे। नरक-स्वर्ग अर्थात् दुःख-सुख की

प्राप्ति भी परमेश्वर की होवे। जैसे किसी मनुष्य ने शस्त्र-विशेष से किसी को मार डाला तो वही मारने वाला पकड़ा जाता है और दण्ड पाता है, शस्त्र नहीं, वैसे पराधीन जीव पाप-पुण्य का भागी नहीं हो सकता। इसीलिए सामर्थ्यानुकूल कर्म करने में जीव स्वतन्त्र परन्तु जब वह पाप कर चुकता है, तब ईश्वर की व्यवस्था में पराधीन होकर पाप के फल भोगता है। इसीलिए कर्म करने में जीव स्वतन्त्र और पाप के दु:ख रूप फल और पुण्य के सुख रूप फल भोगने में परतन्त्र होता है।

प्रश्न- जो परमेश्वर जीव को न बनाता और सामर्थ्य न देता तो जीव कुछ भी न कर सकता। इसलिए परमेश्वर की प्रेरणा ही से जीव कर्म करता है।

उत्तर- जीव उत्पन्न कभी न हुआ, अनादि है। जैसा ईश्वर और जगत् का उपादान कारण नित्य है और जीव का शरीर तथा इन्द्रियों के गोलक परमेश्वर के बनाए हुए हैं परन्तु वे सब जीव के अधीन है। जो कोई मन, कर्म, वचन से पाप-पुण्य करता है, वही भोक्ता है, ईश्वर नहीं।''

- सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास

- चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट,
यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा)

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम - योगी का आत्म चरित्र एक षड्यन्त्र है

लेखक - स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती

प्रकाशन - वेदप्रकाश, आर्य नगर, बड़ौत, मेरठ, उ.प्र.

मूल्य - १२५/- **पृष्ठ संख्या** - २३८

पुस्तक के नाम से ज्ञात होता है कि लोगों ने षडयन्त्र का जाल फैलाया है। झूठ, छल, कपट का नाटक मनमाने ढंग से योगी के प्रति पाठकों के समक्ष प्रेषित किया जा रहा है, कितना दु:साहस है। बिना सिर पैर की बातें करना अपनी लेखनी को सर्वोपरि सर्वमान्य समझना अन्यों को मिथ्या इतिहास की ओर धकेलना कहां का औचित्य है? स्वामी पूर्णानन्द जी ने वास्तविकता के साथ झूठ की ढोल में पोल को सामने रखा है। श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु इतिहास व अन्वेषण के मर्मज्ञ है, उन्होंने सम्पादकीय में सारगर्भित बात कही है। मौन के अर्थ बोलकर नहीं बताये जा सकते, उससे भी महत्व एवं रहस्य स्पष्ट पढ़ने मात्र से स्पष्ट होगा। डॉ. वेदपाल जी द्वारा अनर्गल प्रलाप का भण्डाफोड़ किया गया है। यह सत्य है-

सच्चाई छिप नहीं सकती, झूठे असूलों से। खुशबू आ नहीं सकती, कागज के फूलों से।।

झूठ के पांव उखड़कर ही रहते हैं। लेखक ने अथक प्रयास से शोधपूर्ण कर वास्तविकता एवं ढोंगियों की बात को रखकर निराकरण किया है। अपने नाम का यशोगान कराने के लिए किस प्रकार लेखनी का दुरुपयोग करते हैं, यह स्पष्ट इस पुस्तिका में देखने को मिलती है। अत: पाठक अवश्य पूर्ण पठन कर समझने का प्रयास करें, यही जिज्ञासा है। श्रेय अपने आधार पर नहीं मिलता जबतक कि ठोस प्रमाण न हों।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४

जिज्ञासा समाधान - ९५

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- यह पत्र मैं मन्त्रों में **''स्वाहा''** शब्द के अर्थ में शंका समाधान हेतु लिख रहा हूँ। प्रायः स्वाहा शब्द आहुति देते समय बोला जाता है किन्तु कुछ मन्त्रों में स्वभाविक रूप से स्वाहा शब्द का प्रयोग भी देखा है। अतः आप कृपया यथाशीघ्र स्वाहा शब्द की सभी प्रकार के विभिन्न अर्थ लिखने बताने की कृपा करें। धन्यवाद।

- सुरेन्द्र कुमार आर्य।

समाधान- प्रायः यज्ञ में आहुति देते समय **'स्वाहा'** शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह स्वाहा शब्द मूल वेद मन्त्रों में भी अनेकत्र आया है। इस स्वाहा का जो अर्थ मुझे आप्त लोगों का मिला है वहा यहाँ लिख रहा हूँ-

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस स्वाहा शब्द की व्याख्या निरुक्त के आधार पर अपनी लघु पुस्तक पञ्चमहायज्ञविधि में सन्ध्योपासना के **''चित्रंदेवानामुदगादनीकम्.......।''** इस मन्त्र के अन्त में आये स्वाहा को लेकर की और महर्षि ने वेदभाष्य में भी जहाँ-जहाँ स्वाहा शब्द आया है वहाँ-वहाँ की है। यहाँ पहले पञ्चमहायज्ञविधि वाली व्याख्या देखते हैं-

''स्वाहा अथात्र स्वाहाशब्दार्थे प्रमाणम् निरुक्तकारा आहुः- स्वाहाकृतयः स्वाहेत्येतत्सु आहेति वा, स्वा वागाहोति वा, स्वं प्राहेति वा, स्वाहुतं हविर्जुहातीति वा, तासामेषा भवति। - निरु. अ. ८/खं २०।।''

''स्वाहाशब्दस्यायमर्थः- (सु आहेति वा) सु सुब्ठु कोमलं मधुरं कल्याणकरे प्रियं वचनं सर्वैर्मनुष्यैः सदा वक्तव्यम्। (स्वा वागाहेति ना) या स्वकीय वाग् ज्ञान मध्ये वर्त्तते, सा यदाह तदेव वागिन्द्रियेण सर्वदा वाच्यम्। (स्वं प्राहेति वा) स्वं स्वकीय पदार्थ प्रत्येव स्वत्वं वाच्यम् न पर पदार्थ प्रति चेति। (स्वाहुतं ह.) सुष्ठरीत्या संस्कृत्य संस्कृत्य हविः सदाहोतव्यमिति स्वाहाशब्दस्यपर्य्यायार्याः स्वमेव पदार्थ प्रत्याह वयं सर्वदा सत्यं वदाम इति, न कदाचित् पर पदार्थ प्रति मिथ्या वदेमेति।'' - पंचमहा.

अर्थात्- १. जिस क्रिया के द्वारा सुन्दर मधुर कल्याणकर शब्द या वचन बोले जाते हैं, २. अपनी वाणी के द्वारा वही वचन बोलना जो हृदय में है,३. अपने ही पदार्थ को अपना कहना दूसरे के पदार्थ में लालसा न करना, ४. सुसंस्कृत हवि सत्यवाणी, सत्य-आचरणयुक्त क्रिया, त्याग एवं सुखकारी क्रिया, सुसंस्कृत हवि प्रदान करने की क्रिया, प्रशंसायुक्त वाणी, अपने पदार्थ के प्रति सदा सच बोलना और दूसरे के पदार्थ के प्रति कभी मिथ्याभाषण न करना आदि स्वाहा के अर्थ हैं। निघण्टु में वाक् को स्वाहा कहा है।

पौराणिक लोग इस स्वाहा के इतने महत्त्वपूर्ण अर्थ को छोड़कर अपनी काल्पनिक कथा के अनुसार लेते हैं। भागवत पुराण के अनुसार स्वाहा दक्ष की कन्या और अग्नि की पत्नी है। ब्रह्मवैवर्तपुराण प्रकृति खण्ड, स्वाहोपाख्यान नामक अध्याय में स्वाहा की उत्पत्ति आदि को विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

स्वाहा देवहविर्दाने प्रशस्ता सर्वकर्मसु।
पिण्डदाने स्वधा शस्ता दक्षिणा सर्वतो वरा।।१.
प्रकृतेः कलया चैव सर्वशक्तिस्वरूपिणी ।
बभूव वाविका शक्तिरग्ने स्वाहा स्वकामिनी।।२.
ईषद् हास्यप्रसन्ननास्या भक्तानुग्रकातरा।
उवाचेति विधेरग्रे पद्मयोने । वरं श्रुणु।।३.
विधिस्तद्वचनं श्रुत्वा संभ्रमात् समुवाच ताम्।४.
त्वमग्रेर्दाहिका शक्तिर्भव पत्नी च सुन्दरी।
दग्धुं न शक्तस्त्वकृती हुताशश्च त्वया विना।।५.
तन्नामोच्चार्य मन्त्रान्ते यो दास्यति हविर्णरः।
सुरेश्यस्तत् प्राप्नुवन्ति सुराः स्वानन्दपूर्वकम्।।६.

इन पुराण के श्लोकों में 'स्वाहा' को एक स्त्री के रूप में दर्शाया है। उसको अग्नि की पत्नी कहा है, जैसे अन्य देवियों की स्तुति पुराणों में मिलती है इन श्लोकों में भी स्वाहा रूप अग्नि की पत्नी की स्तुति की गई है। ऊपर जो सत्य शास्त्रोक्त अर्थ लिखा उससे यह पौराणिक मान्यता सर्वथा भिन्न व अवैदिक है।

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य व अन्य ग्रन्थों में स्वाहा

अर्थ लगभग तरेसठ (६३)स्थलों पर आया है जो शास्त्र सम्मत है। यहाँ महर्षि दयानन्द द्वारा कुछ और स्थलों पर स्वाहा के लिए किये गये अर्थों को लिखता हूँ-

''**सत्यभाषणयुक्ता वाक्, यच्छोभनं वचनं सत्यकथनं, स्वपदार्थान् प्रति ममत्ववचो, मन्त्रोच्चारणेन हवनं चेति स्वाहा-शब्दार्था विज्ञेयाः।**'' - यजुर्वेद २.२

जो सत्यभाषणयुक्त वाणी, भ्रमोच्छेदन करने वाला सत्य कथन, अपने ही पदार्थों के प्रति ममत्व अर्थात् अपनी वस्तु को ही अपना कहना और मन्त्रोच्चार के साथ हवन आहुति देना ये सब स्वाहा के अर्थ हैं।

''**सुष्ठु जुहोति, गृहणाति, ददाति यथा क्रियया तथा, सुशिक्षितया वाचा, विद्याप्रकाशिकया वाण्या सत्यप्रियत्वादिगुणविशिष्टयावाचा।**'' - यजु. ४.६

जिस क्रिया के द्वारा अच्छे प्रकार ग्रहण किया और दिया जाता है, सुशिक्षा से युक्त, विद्या को प्रकाशित करने वाली, सत्य और प्रियता रूपी गुणों से विशिष्ट वाणी के द्वारा जो क्रिया की जाती है वह स्वाहा कहलाती है।

''पुष्टायादि कारक घृतादि उत्तम पदार्थों के होम करने।'' स.प्र.

''**सत्यमानं, सत्यभाषणं सत्याचरणं सत्यवचनश्रवणश्च**'' - ऋ. भा. भू.।

सत्य को मानना, सत्य भाषण करना, सत्य का आचरण करना और सत्यवचन का सुनना।

''**जैसा हृदय में ज्ञान वैसा वाणी से भाषण।**''

- आर्याभि.

ये सब महर्षि द्वारा किये गये स्वाहा के अर्थ हैं। अधिक जानने के लिए महर्षि दयानन्दकृत यजुर्वेद भाष्य व शतपथादि ग्रन्थों का अध्ययन करें। अलम्

- सोमदेव ऋषि उद्यान, अजमेर

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

संस्था - समाचार

१६ से २३ अगस्त २०१५

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है, प्रात: काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्र का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द द्वारा रचित ग्रन्थ आर्योद्देश्यरत्नमाला का स्वाध्याय कराया जाता है।

प्रात:कालीन - प्रवचन के क्रम में महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल के आचार्य **श्री सत्यजित् जी** ने कहा कि वेदज्ञान किसी एक देश- विशेष जाति-विशेष या सम्प्रदाय-विशेष के लिये नहीं है। सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिये परमात्मा ने वेद ज्ञान दिया है। ऋग्वेद के तीसरे मंडल के तैंतालीसवें सूक्त के आठवें मन्त्र में कहा गया है कि मनुष्य लोग अपनी अज्ञानता दूर करने के लिये श्रद्धापूर्वक विद्वानों के शरण में जावें। उनसे विनम्रता, शिष्टतापूर्वक प्रश्नोत्तर आदि की रीति से विद्या ग्रहण कर अविद्या और दरिद्रता को दूर करें। उससे विद्या और धन आदि पदार्थों को प्राप्त कर आनन्दित होवें। आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में धनवान भी दरिद्र होता है और गलत उपायों से और अधिक धन प्राप्त करना चाहता है। वर्तमान सदी ज्ञान की सदी है। शिक्षण संस्थाओं की बहुलता है, कम्प्यूटर और इन्टरनेट का प्रचलन है। वैदिक और अवैदिक दोनों प्रकार की शिक्षण पद्धति प्रचलित हैं। अगले दिन ऋग्वेद के तीसरे मंडल के चौवालीसवें सूक्त के पाँचवे मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि मनुष्यों का हित सबसे अच्छे ढंग से कैसे हो सकता है यह मनुष्य स्वयं नहीं जानता किन्तु परमात्मा जानता है इसलिये उन्होंने वेदों में हम सब के कल्याण का उपदेश किया है। वेद में बताया गया है कि जैसे सूर्य के प्रकाश से अंधकार दूर होने पर सुख होता है वैसे ही जो लोग विद्या, नम्रता, सेना अर्थात् बल और धन का प्रकाश करके अविद्या आदि की निवृत्ति करते हैं उनकी सब इच्छायें पूरी होती हैं। ऋग्वेद के तीसरे मंडल के पैंतालीसवेंसूक्त के पहले मन्त्र का भावार्थ करते हुए कहा कि वेद संसार के सब मनुष्यों का धर्म ग्रन्थ है, इसमें जो कुछ भी कर्तव्य कर्म है वह सब धर्म ही है। वेद की सब शिक्षायें बुद्धि और सृष्टि के नियम अनुकूल और पूर्ण प्रामाणिक है। धर्म का अर्थ केवल पूजा-पाठ, संध्योपासना, यज्ञ, दान, उपदेश-प्रवचन आदि ही नहीं है बल्कि ईमानदारी से बुद्धि और परिश्रम पूर्वक शासन व्यवस्था, देश की बाहरी और आंतरिक सुरक्षा, शिक्षा, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग, नौकरी, सेवा करना आदि भी सब धर्म ही है। ये सब अपने और पराये सुख का कारण है, इसलिये धर्म है। किन्तु इन कर्मों में जो लोग आलस्य, प्रमाद, बेईमानी आदि करते हैं वे सब अधर्मी हैं।

प्रात: कालीन सत्संग के क्रम में **स्वामी आशुतोष जी** ने वेद के मेधा परक मन्त्रों की व्याख्या करते हुए कहा कि प्रकृति से निर्मित जड़ पदार्थों में सर्वश्रेष्ठ पदार्थ बुद्धि परमात्मा ने मनुष्यों को दी है इसी से हम निश्चय करते हैं। यही बुद्धि योगाभ्यास से मेधा, ऋतम्भरा, प्रज्ञा बन जाती है। वेदों के भाष्यकर्ता, ब्रह्मा से लेकर आज पर्यन्त जितने भी ऋषि-महर्षि हुए हैं उन सबने अपनी मेधा बुद्धि का विकास करके ही महान कार्य सम्पन्न किये। मानव जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य अभ्युदय और नि:श्रेयस की प्राप्ति, बुद्धि को उत्थान के चरम तक पहुँचा करके ही सम्भव है। उन महापुरुषों का अनुकरण करते हुए आहार विहार, ब्रह्मचर्य, तप, संयम आदि करके हम भी मेधा बुद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। क्रिकेट आदि खेलों को देखने सुनने में बहुत समय बर्बाद करते हैं लेकिन अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के लिये समय नहीं लगाते। प्रात:कालीन नित्य पढ़े जाने वाले **'भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्न:। भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्त: स्याम।।'** यजुर्वेद अध्याय ३४ के ३६ वें मन्त्र का अर्थ करते हुए स्वामी जी ने कहा कि इस मन्त्र में भग (ऐश्वर्य) की कामना है। विद्या, बुद्धि, कला, कौशल, स्मृति, समाधि, मुक्ति आदि सब ऐश्वर्य ही हैं क्योंकि ये सब संसार का ज्ञान करा के हमें परमेश्वर से जोड़ते हैं। भौतिक ऐश्वर्यों के लोभ में आज धर्म, संस्कृति, बुद्धि, शरीर सब कुछ बिक रहे हैं। साधारण व्यक्ति , विद्वान्, साधु समझौता करके स्वयं को

बेच रहे हैं। बुद्धि का ह्रास हो रहा है, सत्य, न्याय, धर्म का नाश हो रहा है। संसार में जो आज अपने दिखाई देते हैं वे पराये हो जाते हैं, केवल परमात्मा ही हमारा अपना है जो इस संसार में रहते हुए और शरीर छूटने के बाद मुक्ति में भी साथ रहता है। योगियों ,उपासको को सात प्रकार की श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त होती है।

प्रात:कालीन सत्संग में वेद उपदेश करते हुए आचार्य सोमदेव जी ने बताया कि संसार में दो प्रकार के व्यक्ति दिखाई देते हैं एक आध्यात्मिक और दूसरा सांसारिक। आध्यात्मिक लोग संख्या में कम होते हैं और सांसारिक (भौतिक सुख चाहने वाले) लोगों की संख्या ज्यादा होती है। ऋषिगण, आध्यात्मिक लोग भद्र की इच्छा करते हैं वे सुख और दुख के यथार्थ स्वरूप को जानते हैं। वे तप और दीक्षा से सम्पन्न होते हैं। प्राचीन काल में राजा जनक द्वारा आयोजित यज्ञ में उद्दालक के पहुँचने पर राजा अपने आसन से उठकर स्वयं उनका स्वागत करते हैं। उन्हें यज्ञ का ब्रह्मा स्वीकार करते हैं। महर्षि उद्दालक ने उपस्थित विद्वानों को दो प्रश्न पूछे- १. यज्ञ का आत्मा क्या है? २. यज्ञ का प्राण क्या है? राजा जनक और अन्य विद्वानों के उत्तर न देने पर स्वयं इन प्रश्नों का उत्तर बताते हुए कहते हैं यज्ञ की आत्मा 'स्वाहा' है। 'स्वाहा' न रहे तो यज्ञ भी नहीं रहेगा। यज्ञ का प्राण 'इदं न मम' है। यह मेरा नहीं है। 'इदं न मम' श्रद्धापूर्वक त्याग का प्रतीक है, मोक्ष का कारण है। 'इदं मम' कहने वाले का यज्ञ करना, योगाभ्यास करना व्यर्थ है। 'इद मम' बन्ध और दुखों का कारण है।

आध्यात्मिक व्यक्ति अपने कुसंस्कारों को नष्ट करने और सांसारिक व्यक्ति सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिये संघर्ष में लगा हुआ है। ईश्वर प्रदत्त यह जीवन संघर्ष युक्त है। भोजन, स्वास्थ्य, विद्या, धन, सामाजिक प्रतिष्ठा, मानसिक क्लेशों से निवृत्ति आदि के लिये संसार का प्रत्येक मनुष्य संघर्षरत है। मनुष्य से भिन्न पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि प्राणी भी अपने जीवन रक्षा के लिये सतत संघर्ष करते दिखाई देते हैं। संघर्ष के बिना उन्नति करना और अपना अस्तित्व बनाये रखना संभव नहीं है।

'भद्रं इच्छन्त ऋषय:' की व्याख्या करते हुए आचार्य जी ने बताया कि सुखी होने के लिये तप और दीक्षा अत्यन्त आवश्यक है। राष्ट्र का पालन भी तप और दीक्षा के बिना सम्भव नहीं है। विदुर जी ने कहा है धर्म में ही कल्याण है। तप और दीक्षा के अभाव में आज हमारे देश में गुरुडमवाद, अज्ञान, अंधकार बढ़ रहा है। जाति और सम्प्रदाय के नाम पर देश के नागरिकों को बाँटा जा रहा है। राष्ट्र का सामाजिक , धार्मिक और आध्यात्मिक पतन हो रहा है।

रविवार प्रात:कालीन सत्संग में पं. रामनिवास गुणग्राहक जी ने आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ईश्वर की भक्ति की आवश्यकता के विषय पर अपने विचार प्रकट किये। मनुष्य शरीर में परमात्मा को प्राप्त करना मुख्य कर्त्तव्य है। लेकिन अधिकांश मनुष्य संशय में रहते हैं कि ईश्वर प्राप्ति की क्या आवश्यकता है? संसार के सभी आस्तिक मतानुयायी मानते हैं कि ईश्वर है और वह तीन कार्य करता है-जगत् का निर्माण, पालन और सब जीवों के कर्मों का फल देना। किन्तु परमेश्वर के गुण, कर्म स्वभाव और स्वरूप के विषय में भिन्न-भिन्न मान्यताऐं। वर्तमान विज्ञान यह स्वीकार करता है कि अत्यन्त सूक्ष्म जड़ पदार्थ परमाणु और ब्रह्माण्ड के बड़े-बड़े जड़ पिण्डों को गति देने वाला कोई चेतन सत्ता अवश्य है। जो अत्यन्त सूक्ष्म और सर्वव्यापक है। चूंकि वैज्ञानिक नास्तिक होते हैं इसलिये उस चेतन सत्ता को ईश्वर नाम नहीं देना चाहते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने कहा था कि परमात्मा के बारे में संसार का कोई मनुष्य सब कुछ नहीं जान सकता किन्तु वह परमात्मा स्वयं जानता है और अपना सम्पूर्ण ज्ञान वेदों के माध्यम से हम सबको देता है।

उड़ीसा निवासी स्वामी आत्मानन्द जी ने कहा कि मनु जी महाराज के अनुसार इस संसार में रहने वाले मनुष्य और पशु-पक्षियों में आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि समान हैं। लेकिन पाँच कार्य ऐसे हैं जिसे मनुष्य कर सकता है मनुष्य इतर पशु आदि नहीं कर सकते । वे पाँच हैं-१. ओम् का ध्यान, २. वेद का ज्ञान, ३. यज्ञ अनुष्ठान, ४. संस्कारी संतान, ५. राष्ट्रहित बलिदान। जो मनुष्य इन पाँच में से किसी एक कार्य को भी नहीं करता है वह पशु ही है, मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है। धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिये गृहस्थ मनुष्यों को संस्कारित संतान उत्पन्न करना चाहिये। स्वाध्याय करते हुए सन्यासियों को देश-देशान्तर में सत्य विद्या का प्रचार प्रसार करते रहना चाहिये।

उपाचार्य सत्येन्द्र जी प्रतिदिन सायंकालीन सत्संग में आयोद्देश्यरत्नमाला पर व्याख्यान देते हैं। उपादान कारण की चर्चा करते हुए कहा कि जिसको ग्रहण करके ही उत्पन्न होवे या कुछ बनाया जाय उसको उपादान कहते हैं। जैसे मिट्टी से घड़ा आदि बनाये जाते हैं। प्रकृति संसार का उपादान कारण है। दर्शनों में वैषेशिक और न्याय, जगत् की रचना अणु-परमाणु से प्रारम्भ मानता है। सांख्य, वेदान्त, योग प्रकृति के सत्व, रजस और तमस के संघात से सृष्टि का आरम्भ बताते हैं। प्रकृति से महत् तत्व अर्थात् बुद्धि, उससे अहंकार, अहंकार से तन्मात्रा उत्पन्न होती हैं। तन्मात्राओं से आकाश वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी का निर्माण होता है। प्रकृति ही इन्द्रियाँ और मन का कारण है। जैसे कुम्हार मिट्टी से घड़ा बनाता है वैसे ही इस दृश्यमान् जगत् को परमात्मा उपादान प्रकृति से बनाता है।

२. विशेष कार्यक्रम- (क) अजमेर ब्लोसम स्कूल व डी.ए.वी. स्कूल के छात्र-छात्रा ऋषि उद्यान आये। श्री विश्वास पारीक सपत्निक यजमान बने तथा ब्लोसम स्कूल के डायरेक्टर श्री अशोक कश्यम भी कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

(ख) जीव सेवा समिति और परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में २१ वर्षों से लगातार वृष्टि यज्ञ का आयोजन होता है। ऋषि उद्यान में २ महिने से चले आ रहे वृष्टि यज्ञ का २५ अगस्त को समापन हुआ, जिसमें सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीर जी, मन्त्री श्री ओममुनि जी, जीव सेवा समिति के मुख्य श्री सिद्ध भाऊजी, घनश्याम कुगवानी व सभी पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

(ग) परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में विभिन्न प्रान्तों से व्याकरण और दर्शन के अध्ययन के लिए आए हुए नए १० ब्रह्मचारियों (ब्र. भूदेव, ब्र. शिवनाथ, ब्र. देवेन्द्र, ब्र. मनोज, ब्र. वेदप्रिय, ब्र. सन्तोष, ब्र. अशोक, ब्र. रूपेश, ब्र. रोशन, ब्र. विनीत) का श्रावणी पर्व पर गुरुकुल के उपाचार्य श्री सत्येन्द्र जी व डॉ. धर्मवीर जी के सान्निध्य मं उपनयन व वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। पश्चात् सरस्वती भवन में श्रावणी कार्यक्रम मनाया गया जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, आश्रमवासियों व नगर से पधारे हुए महानुभावों ने भजन, प्रवचन किए। हैदराबाद में शहीद हुए वीरों को भ याद किया गया। परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर ने संस्कृत की महत्ता को धारावाही संस्कृत भाषा मं लोगों के सामने प्रस्तुत किया।

(३) डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम-

(क) १८ अगस्त २०१५- श्री तपेन्द्र जी के घर पारिवारिक यज्ञ और उद्बोधन प्रदान किया।

(ख) २० अगस्त- अशोक विहार दिल्ली में ऋषिपाल आर्य के घर पारिवारिक सत्संग किया।

(ग) २१ से २३ अगस्त- आर्यसमाज नजलगढ़, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर व्याख्यान प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) १ से ६ सितम्बर- आर्यसमाज श्यामली, उ.प्र. में वेदकथा करेंगे।

(ख) ११ से १३ सितम्बर- भिण्ड, मध्यप्रदेश में यज्ञ सत्संग का कार्यक्रम करेंगे।

विवाह करके स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि जिस-जिस काम से विद्या, अच्छी शिक्षा, बुद्धि, धन, सुहृद्भाव और परोपकार बढ़े उस कर्म का सेवन अवश्य किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जिसके माता और पिता विद्वान् न हों, उनके सन्तान भी उत्तम नहीं हो सकते।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.९

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४

सभाध्यक्ष को चाहिये कि सूर्य्य और चन्द्रमा के समान श्रेष्ठ गुणों को प्रकाशित और दुष्ट व्यवहारों को शान्त कर के श्रेष्ठ व्यवहार से सज्जन पुरुषों को आह्लाद देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.१६

स्तुता मया वरदा वेदमाता-१८

मन्त्र के प्रथम पद में घर में रहने वाले सदस्यों के मध्य भोजन अन्नपान आदि की व्यवस्था सन्तोषजनक होने की बात की है। घर के सभी सदस्यों को उनकी आवश्यकता, वय, परिस्थिति के अनुसार पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिये। घर में भोजन के शिष्टाचार में बच्चे, बूढ़े, रोगी और महिलाओं के बाद पुरुषों का अधिकार आता है। असुविधा दो कारणों से उत्पन्न हो सकती है- प्रथम आलस्य, प्रमाद, पक्षपात से तथा दूसरी ओर अभाव से। इसके लिये उत्पादन से वितरण तक अन्न की प्रचुरता का शास्त्र उपदेश करता है।

वेद में अन्न को सब धनों से बड़ा धन बताया है। विवाह संस्कार के समय अभ्यातान होम की आहुतियाँ देते हुए मन्त्र पढ़ा जाता है- **अन्नं साम्राज्यानां अधिपति**- संसार में, जीवन में किसी वस्तु का सबसे अधिक महत्त्व है तो वह अन्न है। वेद ने अन्न को **साम्राज्यानां अधिपति** कहा है। अन्न संसार में राजा से भी बड़ा है। यदि राज्य में अकालादि के कारण अन्न का अभाव हो जाये तो राज्य का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। अन्न नहीं तो मनुष्य नहीं, मनुष्य नहीं तो समाज नहीं फिर देश और राष्ट्र की बात ही कहाँ से आती? इसलिये प्राण को बचाने का आधार होने से अन्न को ही प्राण कहा गया है- **अन्नं वै प्राणिनां प्राणाः।**

अन्न की मात्रा की चर्चा करते हुए हर प्रकार से सभी प्रकार के अन्नों को प्रचुर मात्रा में उत्पन्न करने का विधान किया गया है। शास्त्र कहता है- **अन्नं बहु कुर्वीत**- अन्न को बहुत उत्पन्न करना चाहिए। प्राकृतिक रूप से स्वयं उत्पन्न अन्न जंगली प्राणी, तपस्वी साधकों के लिये होते हैं। नगर, ग्रामवासियों को तो अन्न अपने पुरुषार्थ से उत्पन्न करना पड़ता है। अन्न उत्पन्न करने की पद्धति वेद से प्रतिपादित है। अन्न को उत्पन्न करने की प्रक्रिया को कृषि कहा गया है। अन्न एवं उससे सम्बन्धित सामग्री का उत्पादक कृषिवलः या कृषक होता है। वेद समस्त मनुष्यों को उपदेश देता है- **कृषिमित् कृषस्व**, हे मनुष्य तू खेती कर, इसी में पशुओं की प्राप्ति है। इसी से धन की प्राप्ति है। जब वर्षा न होने से अन्नादि की उत्पत्ति न्यून होती है, तब संसार के सारे व्यवसाय स्वयं नीचे आ जाते हैं। समस्त साधनों, सुख-सुविधाओं का मूल खेती है, अतः जो देश समाज सुखी होना चाहते हैं, उन्हें अपनी खेती को गुणकारी और समुन्नत बनाना चाहिए। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कृषि के महत्त्व को देखकर लिखा है कि किसान राजाओं का राजा है। संसार के जीवन का आधार अन्न है और अन्न का आधार किसान है।

संसार में मनुष्य को जीवनयापन के साधनों का संग्रह करना पड़ता है, साधनों के लिए धन प्राप्ति हेतु नाना व्यवसाय करने होते हैं। संसार में हजारों व्यवसाय हैं, परन्तु सभी व्यवसाय गौण हैं। **समाज में दो ही व्यवसाय मुख्य हैं- एक खेती और दूसरा है शिक्षा।** एक से शरीर जीवित रहता है, बलवान बनता है, दूसरे से आत्मा सुसंस्कृत होती है। अन्य सभी व्यवसाय तो इन दो से जुड़े हुए हैं।

अन्न को उत्पन्न करने के साथ उसे नष्ट न करने या उसका दुरुपयोग रोकने के लिये भी कहा गया है। कभी अन्न की निन्दा न करने के लिये कहा है, इसीलिये भारतीय संस्कृति में अन्न को देवता कहा गया है। अन्न को जूठा छोड़ने या बर्बाद करने को पाप कहा गया है। हम भोजन कराने वाले को अन्नदाता कहते हैं। अन्न को बुरी दृष्टि से न देखें। अन्न के उत्पादन, सुरक्षा एवं सदुपयोग को मनुष्य के जीवन का अङ्ग बताया गया है। इस प्रवृत्ति के रहते ही मनुष्य अन्न का इच्छानुसार पर्याप्त मात्रा में उपभोग कर सकता है। किसी के प्रेम को प्राप्त करने के उपाय के रूप में प्रेम से भोजन कराने का निर्देश है। स्वामी दयानन्द ने कहा है- भोजन प्राणिमात्र का अधिकार है। हर भूखा प्राणी भोजन का अधिकार रखता है।

क्रमशः ....

आर्यजगत् के समाचार

१. स्वतन्त्रता दिवस पर आसनों की प्रस्तुति- आर्यवीर दल अजमेर द्वारा दिनांक १५ अगस्त २०१५ को ६९वें स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में अजमेर जिले के जिला स्तरीय कार्यक्रम में पटेल मैदान में अजमेर लगभग १५० आर्यवीर दल ने योगासनों व प्राणायाम प्रस्तुत किया जिसकी जिला प्रशासन व जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसी क्रम में स्वतन्त्रता दिवस की शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम में विजय स्मारक पर आर्यवीरों ने भाग लिया व वाहन रैली निकाल कर शहीदों को श्रद्धाजंलि अर्पित की।

दि. १६ अगस्त को सभी आर्यवीरों ने सपरिवार ऋषि उद्यान में यज्ञ में भाग लिया व सभा मन्त्री श्री ओममुनि जी द्वारा आर्यवीरों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। आचार्य सत्यजित् जी ने आर्यवीरों को उदबोधन प्रदान किया। कार्यक्रम में श्री सुशील शर्मा, आशीष कुमावत, प्रणव प्रजापति, हरेन्द्र राठौड़, शिवकुमार का कार्य सराहनीय रहा। ब्लॉसम स्कूल के प्रधानाचार्य श्री अशोक कश्यप सपत्नीक उपस्थित थे। उक्त जानकारी आर्यवीर दल जिला संचालक श्री विश्वास पारीक ने दी।

२. वेद कथा- आर्यसमाज नरवाना के तत्त्वावधान में १ से ५ सितम्बर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक श्रावणी पर्व पर वेद कथा एवं चतुर्वेद शतकम पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। आर्यसमाज के प्रधान इन्द्रजीत आर्य, मन्त्री विजय कुमार, कोषाध्यक्ष अश्वनी आर्य ने बताया कि इस यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् वक्ता आचार्य डॉ. महावीरसिंह थे। वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ आर्य कन्या गुरुकुल हाथरस की छात्राएँ द्वारा की गई।

३. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज जागृति विहार, मेरठ ने भव्य कार्यक्रम के अवसर पर दि. २१ से २३ जुलाई २०१५ तक जागृति विहार के समस्त क्षेत्रों में प्रभात फेरी कर जन जागरण का प्रचार किया। दि. २४ व २५ को यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा सहभोजन का आयोजन किया गया। पं. घनश्याम प्रेमी- मुजफ्फरनगर ने राष्ट्रप्रेम, ईशभक्ति व महर्षि दयानन्द को स्मरण करते हुए संगीतमय प्रस्तुत दी, परोपकारिणी सभा से पधारे कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने वेदमन्त्रों की बहुत ही सरल शब्दों में पूजा, धर्म और शिक्षा पर सारगर्भित उद्बोधन किया। इस अवसर पर डॉ. वेदपाल आर्य, स्वामी मुक्तानन्द एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द का भी उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोक कुमार व संचालन श्री रामसिंह आर्य ने किया।

४. संगोष्ठी सम्पन्न- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के १२१वें जन्मदिवस के अवसर पर श्रावण शुक्ल एकादशी विक्रमाशब्द २०७२, तदनुसार २६ अगस्त २०१५ को सम्पन्न हुई गोष्ठी का विषय था- 'वैदिक अध्यात्म विज्ञान की सार्वभौमिकता।' गोष्ठी में महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के पूर्व सचिव श्री प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय, संयोजक प्रो. सोमदेव शतांशु थे। शोधपत्र वाचकों में प्रो. रमेश भारद्वाज- दिल्ली वि.वि., प्रो. सुरेन्द्र कुमार- महर्षि दयानन्द विवि., डॉ. रामसुमेरू यादव-लखनऊ वि.वि., डॉ. विनोद शर्मा- वृन्दावन, डॉ. जगमोहन- दिल्ली वि.वि., डॉ. सत्यकेतु- लखनऊ वि.वि., डॉ. वेदव्रत- गुरुकुल कांगड़ी वि.वि., डॉ. सत्यपालसिंह- दिल्ली वि.वि. प्रमुख थे।

५. भव्य स्वागत- आर्यवीर दल राज. के प्रान्तीय कोषाध्यक्ष एवं आर्यसमाज गंगापुरसिटी के पूर्व प्रधान गोविन्दप्रसाद आर्य की पुत्रवधू रेनू आर्य ने पार्षद पद पर विजय हासिल करने के उपलक्ष्य में आर्यसमाज, महिला आर्यसमाज व आर्यवीर दल के अधिकारियों ने माल्यार्पण कर हार्दिक अभिनन्दन किया। उक्त जानकारी आर्यसमाज गंगापुरसिटी के मन्त्री मदनमोहन गुप्ता ने दी।

६. सत्संग- टंकारा आर्यसमाज द्वारा जून से अगस्त २०१५ तक टंकारा ग्राम के विविध क्षेत्रों में पारिवारिक हवन सत्संग चला रहा है, जिनमें भारी संख्या में महिलायें-युवा भाग ले रहे हैं। अंधविश्वास, हवन का महत्त्व, आर्यसमाज क्या है? ईश्वर-जीव-प्रकृति आदि विषयों पर व्याख्यान होते हैं। गत २४-२५ अगस्त को स्वामी विवेकानन्द जी टंकारा पधारे, टंकारा की स्कूलों में स्वामी जी के कई विषयों पर व्याख्यान आयोजित किये गए।

७. पुरोहित एवं उपदेशक प्रशिक्षण शिविर- देश-विदेश में धर्म प्रचार हेतु पुरोहित एवं व्याख्यान के विशिष्ट प्रशिक्षण के निमित्त शास्त्री या उसके समकक्ष योग्यता वाले युवाओं के लिए त्रिदिवसीय शिविर आयोजित है। शास्त्री या उसके समकक्ष डिग्री अपेक्षित नहीं है। यदि आप स्वयं को इसके उपयुक्त समझते हैं और इस क्षेत्र में रुचि रखते हैं तो सम्पर्क करें। अभी प्रारम्भिक स्तर पर

त्रिदिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसके पश्चात् इसको विस्तार दिया जाएगा।

प्रशिक्षण विषय- १. वैदिक दर्शन एवं सिद्धान्त, २. कर्मकाण्डों की प्रक्रिया और उनका वैज्ञानिक महत्त्व, ३. व्याख्यान कला, ४. लोक व्यवहार।

प्रशिक्षण देने के लिए - डॉ. धर्मवीर शास्त्री, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. विनय विद्यालंकार तथा अन्य मूर्धन्य आर्य विद्वान् इसमें समय-समय पर उपस्थित रहेंगे। निवास व भोजन का समुचित प्रबन्ध रहेगा। इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि प्रेषित करें। सम्पर्क- श्री सुरेन्द्र प्रताप- ०९९५३७८२८१३, श्री राजीव चौधरी- ०९८१००१४०९७, आर्यसमाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-१, बी-३१/सी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-४८

८. कन्या गुरुकुल का भव्य शिलान्यास- वैदिक विदुषिओं के निर्माण हेतु आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट, रोजड़, गुजरात द्वारा 'आर्यवन आर्ष कन्या गुरुकुल' का आरम्भ १६ अप्रैल २०१६ को होने जा रहा है। गुजरात में केवल मात्र आर्ष पाठ्यविधि से चलने वाला यह प्रथम कन्या गुरुकुल है, जिसका भव्य शिलान्यास समारोह गुजरात राज्य शिक्षामन्त्री मान्या श्रीमती वसुबहन त्रिवेदी एवं आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद, तेलंगाणा की प्रधानाचार्या आनन्दीया आ. नीरजा जी के करकमलों से, गुजरात युनिवर्सिटी के संस्कृत विभागध्यक्ष प्रो. डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में सम्पन्न हुआ।

पूज्य स्वामी सत्यपति जी, आनन्दीया आ. नीरजा जी, शिक्षामन्त्री मान्या वसुबहन, मुख्यमन्त्री महामना आनन्दीबहन, पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री, स्वामी शान्तानन्द जी आदि ने शुभकामनाएँ प्रदान की। सम्पर्क सूत्र- ०१५०२८६३४९०

९. श्रावणी उत्सव सम्पन्न- २९ अगस्त को महर्षि भारद्वाज आश्रम, जुवा, बलांगिर, ओडिशा में हर्षोल्लास से श्रावणी उपाकर्म महोत्सव मनाया गया। महोत्सव में सैकड़ों की संख्या में धर्मानुरागी सज्जनों ने भाग लिया। कार्यक्रम की व्यवस्था बालकृष्ण आर्य और गंगाधर आर्य ने किया। यज्ञ के मुख्य यजमान श्रीमान् कैलाश और श्रीमती यज्ञसिनी थे। कार्यक्रम में आश्रम के प्रमुख स्वामी सामदेव जी का और यज्ञ संचालक धरणीधर आर्य के प्रवचन और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

१०. वृष्टि यज्ञ सम्पन्न- आर्यसमाज शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. वृष्टि यज्ञ का आयोजन १८ से २२ अगस्त २०१५ को किया गया, जिसमें यजुर्वेद का सम्पूर्ण पाठ का पठन हुआ तथा वेद प्रचार का आयोजन भी किया गया। उक्त कार्यक्रम में वैदिक विद्वान् श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ- आगरा, श्री भूपेन्द्रसिंह- अलीगढ़, श्री ओमप्रकाश राघव- पीपराली के उद्‌बोधन, भजन व प्रवचन हुए।

चुनाव समाचार

११. आर्यवीर दल, अजमेर की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान, अजमेर के सरस्वती भवन में आर्यवीर दल की जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें सभा के यशस्वी मन्त्री श्री ओममुनि जी, श्री वासुदेव आर्य, प्रान्तीय सह संचालक श्री देवेन्द्र शास्त्री ने सम्बोधित किया तथा विभिन्न पदों पर नियुक्तियाँ दी गई- श्री विश्वास पारीक- जिला संचालक, श्री नीरज चौधरी- जिला सह संचालक, श्री सुशील शर्मा- जिला मन्त्री, श्री अभिषेक कुमावत- जिला कोषाध्यक्ष, डॉ. मृत्युञ्जय- अधिष्ठाता, श्री सुनील जोशी- सम्भाग मन्त्री, श्री प्रणव प्रजापति- जिला नगर संचालक, श्री महेश वर्मा- सह कोषाध्यक्ष, श्री आशीष कुमावत- जिला प्रचार मन्त्री, श्री कमलेश पुरोहित- कार्यालय प्रभारी, श्री हेमन्त कुमारार्यः- बौद्धिक अध्यक्ष, श्री जितेन्द्र आर्य- प्रधान शिक्षक, श्री हर्षजीतसिंह चुड़ावत- प्रवक्ता, श्री हरेन्द्रसिंह राठौड़- संगठन मन्त्री, श्री अक्षय राजावत- उप नगर संचालक, श्री घनश्याम नरुका- मीडिया प्रभारी, श्री नरेन्द्रसिंह राठौड़- विधि सलाहाकार, श्री अशोक व राजेश कश्यप- सम्मानित सदस्य।

१२. मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव में **संयोजक**- श्री खुशहालचन्द आर्य, **सह संयोजक**- श्री चेतन आर्य, **सदस्य**- श्री डॉ. नरेन्द्रसिंह चौहान, श्री राधेश्याम माली, श्री राजेश आर्य को चुना गया।

१३. उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज शहीदनगर, भूवनेश्वर के चुनाव में **प्रधान**- स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, **मन्त्री**- श्री वीरेन्द्र कुमार पण्डा, **कोषाध्यक्ष**- श्री गोपालदास रावल को चुना गया।

१४. आर्यसमाज शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री कन्हैयालाल आर्य, **मन्त्री**- श्री सत्यनारायण तोलम्बिया, **कोषाध्यक्ष**- श्री कानजी चौहान को चुना गया।

यज्ञोपवीत ग्रहण करते हुए

हवन करते हुए

समित्पाणी होते हुए

दण्ड ग्रहण करते हुए

उपनयन एवं वेदारम्भ की झलकियाँ

डॉ. धर्मवीर जी, उपाचार्य सत्येन्द्र जी एवं नवीन ब्रह्मचारीगण।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

अज. पो./ए.जे. 80/2015-2017 तक
प्रेषण : 15 सितम्बर, २०१५

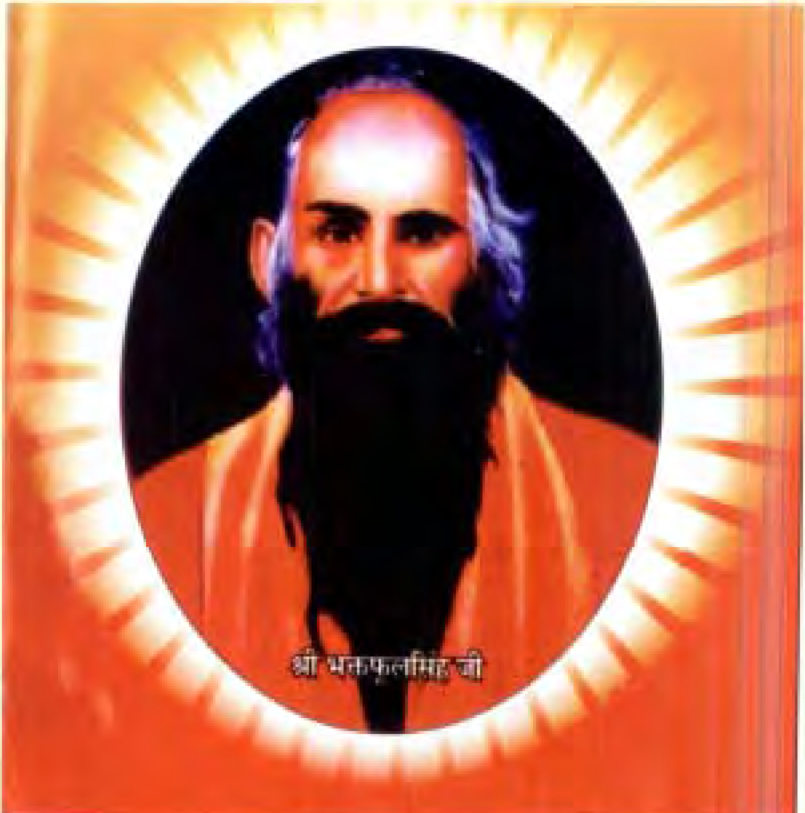

अमर बलिदानी भक्त फूलसिंह जी

जन्म
24.02.1885

बलिदान
14.08.1942

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

सेवा में,